OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 1


# ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -23 अंक - 19 जनवरी -I-2021 (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.50


# साकार में ब्रह्मा के चरित्र ने लिया आकार

**महापुरुषों का जीवन एक चमत्कार होता है। उनका जन्म तो साधारण मनुष्यों की तरह ही होता, पर वे जीते हैं एक असाधारण मनुष्य की तरह। जीवन तो प्रत्येक व्यक्ति को मिलता है, किंतु जिस जीवन से देश व समाज का उद्धार होता हो, धर्म और संस्कृति का उत्थान होता हो और मानवता की सेवा होती हो, ऐसा जीवन जीने का साहस किसी-किसी में होता है। भारतीय संस्कृति के प्राण, अहिंसा और त्याग के प्रतिमूर्ति ने इन सभी आदर्शों को चरितार्थ किया है। ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी प्रजापिता ब्रह्मा बाबा समाज के लिए एक पथ-प्रदर्शक रहे।**

बहुआयामी व्यक्तित्व की सबसे पहली और सबसे प्रमुख बात यह थी कि वे नैतिकता के विशाल विग्रह थे। उन्होंने लोक-मत के दबाव में आकर या किसी भी आर्थिक कारणवश अपने किसी भी नैतिक सिद्धान्त का उल्लंघन नहीं किया। वे उत्कृष्ट, बौद्धिक, समग्रता तथा अद्वितीय नैतिक श्रेष्ठता से सम्पन्न व्यक्ति थे। आध्यात्मिक उत्कर्ष और मानसिक धृति की दृष्टि से योगाचार के एक जीते-जागते उदाहरण थे।

## एक योग्य प्रशासक, एक दूरदर्शी योजनाकार तथा एक महान दृष्टा

तथापि, वे मात्र सुधारक नहीं थे, बल्कि एक महान प्रशासक भी थे, जिनकी प्रशासन-प्रणाली मनुष्य के प्रति प्रेम और सम्मान पर आधारित थी। वे मानव-जाति की सेवा से अभिप्रेरित थे और दिव्य गीत से परिपूर्णता प्राप्त करना उनका लक्ष्य था।

वे एक बुद्धिमान तथा दूरदर्शी आत्मज्ञ थे। उनके पास विलक्षण दृष्टि थी। अपने समय से बहुत आगे की ओर देखकर उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्था को एक ईश्वरीय विश्व विद्यालय का रूप दिया और उसे एक आत्मनिर्भर तथा स्वावलंबी प्रणाली बना दिया। वे पूर्वानुमान कर सकते थे कि कौन-सी आत्मायें भविष्य में किस भूमिका का निर्वाह कर सकती हैं और करेंगी। और इसीलिए दशकों पूर्व उन्होंने उनकी देखभाल करने और उन्हें मार्गदर्शन देने का कार्य आरंभ कर दिया, ताकि उन्हें इन बड़े, सामाजिक उत्तरदायित्वों के लिए तैयार किया जा सके। उन्होंने अल्पकालिक, मध्यकालिक तथा दीर्घकालिक आधार पर संस्था के विकास की योजना बनाई। उस समय जबकि संस्था के विरूद्ध उग्र विरोध था, उन्होंने मानसिक रूप से यह देख लिया था कि भविष्य में संस्था के अनुयायियों की संख्या अकल्पनीय रूप से बढ़ेगी और उनके कार्य का स्वरूप क्या होगा, और इसीलिए उन्होंने उन्हें उन परिस्थितियों के लिए अद्वितीय पूर्व दृष्टि के साथ प्रशिक्षित किया। उनकी पूर्व दृष्टि और उनके आयोजन तथा मार्गदर्शन के कारण ही संस्था का इतना विस्तार हुआ, इतनी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई जो आज हम देख रहे हैं। और प्रथम, द्वितीय तथा अनुवर्ती पंक्तियों के समर्पित कार्यकर्ताओं के एक विशाल मंडली का निर्माण हुआ।

## परमात्मा शिव की दर्शन-प्रणाली तथा आचार के सर्वोत्तम व्याख्याता

स्वयं और विश्व को बेहतर और सही ढंग से समझने में उन्होंने जो योगदान दिया, वह उनके गुणों का द्योतक है। यद्यपि स्वयं उन्हें औपचारिक विश्वविद्यालयी शिक्षा प्राप्त हुई थी, तथापि बौद्धिक दृष्टि से वे एक असाधारण पुरुष थे, जो कि एक अद्वितीय विश्व विद्यालय की स्थापना के लिए दैवी-साधन बने। वे न केवल अति-मानसिकी जटिलताओं और सूक्ष्मताओं में पारंगत थे, न केवल उनके पास अलौकिक विज्ञान की गहरी पैठ थी, न केवल उन्हें आध्यात्मिक आचारों की नई-नई ऊँचाइयों का ज्ञान था, बल्कि वे अद्भुत सादगी और दुर्लभ कुशलता के साथ इन सिद्धान्तों को क्रियान्वित कर सकते थे। इस प्रकार वे परमात्मा शिव के सच्चे व्याख्याकार थे और परमात्मा शिव के मन, वचन और कर्म आदि के सर्वोत्तम व्याख्याता थे।

## उनकी अभिव्यंजना-शैली से सभी होते प्रभावित

उनकी अभिव्यंजना-शैली अत्यंत गूढ़ विषय को भी सरल बना देती थी। उन्हें विभिन्न लोगों को विभिन्न स्तर पर संभाषण करने की दुर्लभ प्रतिभा प्राप्त थी। वे बच्चों को भी उतनी ही आसानी से सिखा सकते थे जितनी आसानी से स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों को सिखा सकते थे। वे साधारण लोगों, विद्वानों, सभी को समान रूप से, इतने प्रभावी ढंग से सम्बोधित करते थे कि उनके मन आलोकित हो उठते थे। वे गहन विचार, परिशुद्ध अभिव्यक्ति, दृढ़ विश्वास और सर्वोपरि प्रयोजन की ईमानदारी की अपनी शक्ति और व्यवहार की निष्ठा, मनुष्य को समझने की गहराई और प्रेमपूर्ण व्यवहार के ज़रिये लोगों के दिलों में अपनी बात बिठा देते थे। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि अनेक पुरुषों और महिलाओं ने गहरे मानसिक संतापों की अवस्था में परमात्मा(बाबा) के दर्शन किये और बाबा के वचनों तथा कार्यों से उन हताश तथा निराश लोगों को राहत मिली। ऐसे भी अनेक उदाहरण हैं कि विद्वान जटिल प्रश्नों को लेकर ब्रह्मा बाबा के पास आये और बाबा के संक्षिप्त तथा स्पष्ट उत्तरों ने उनकी मनोग्रंथियों को खोलकर उनका रूपांतरण कर दिया।

ब्रह्मा बाबा के शब्दों में एक विशेष जादू था और वह दिन दूर नहीं है जब उनकी स्पष्ट, प्रेरक वाणी को गहन आध्यात्मिक प्रज्ञान की अभिव्यक्ति माना जायेगा।

## स्नेहमयी व्यक्तित्व तथा अथक कार्यकर्ता

उनमें न केवल उच्च प्रज्ञा थी, बल्कि व्यक्तित्व के वे सभी गुण थे जो किसी व्यक्ति को, सभी बच्चों, पुरुषों, महिलाओं और युवकों का स्नेही बना देते हैं। जो भी लोग उनसे मिलते थे, उन्हें ऐसा लगता था कि वे बाबा के सर्वाधिक प्रिय पात्र हैं। इसलिए लोगों के हृदय में बाबा के प्रति अतिशय अनुराग उत्पन्न हो गया था। वे मानवता के सच्चे प्रेमी थे और हृदय में पीड़ित लोगों के प्रति संवेदना थी। इसी कारण वे दिन में 20 घंटे अथक कार्य करते थे। ऐसे मानवता उद्धारक, प्राण प्यारे बाबा को स्मृति दिवस पर शत् शत् नमन।

OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 2



# स्वमान में स्थित होने का मास

अव्यक्त मास आते ही प्रत्येक ब्रह्मावत्स के मन में अव्यक्त अनुभूति होने लगती है। ब्रह्मा बाबा की गहन तपस्या सामने आने लगती है। वो हमें प्रेरित करती है कि हम भी ऐसी तपस्या करें। ये भाव उमंग देने वाले लगते हैं। जिन्होंने उन्हें तपस्वी रूप में देखा, वे जानते हैं कि बाबा डीप साइलेंस में रहते थे। जो भी उनके पास जाता था वो अशरीरी हो जाता था। सवेरे बाबा स्वयं योग कराया करते थे और फिर आंगन में खड़े होकर सबको दृष्टि देते थे। वह दृश्य अलौकिकता सम्पन्न व अति आकर्षक होता था। कितनों ने ही बाबा को फरिश्ते रूप में देखा। हमें भी उन्हें देख उन्हें फॉलो करने का संकल्प आता है।

वैसे देखा जाए तो सभी से तपस्याएं नहीं होतीं, परन्तु ब्रह्मावत्स अच्छी तपस्या कर रहे हैं। जो गहन तपस्या करते हैं वे थोड़े ही 108 की माला के श्रेष्ठ तपस्वी रतन हैं। ऐसे रतन गुप्त होते हैं। सेवा के महारथियों का इस माला में स्थान नहीं होता। बहुत पवित्र, त्यागी और तपस्वी आत्मा ही इसकी अधिकारी होती है। लम्बा काल निर्विघ्न रहने वाली आत्मायें ही इसमें सुशोभित होंगी। जिन्होंने अभी तक भी काम, क्रोध, अहंकार पर विजय नहीं पाई, वे तो इस माला को सिमरण करने वाले ही बनेंगे।

ऐसे श्रेष्ठ संगमयुग की बेला में हर ब्रह्मा वत्स अमृतवेले विशेष रूप से गहन तपस्या और परमात्म मिलन के सुख की अनुभूति किये बिना नहीं रह पाते। अव्यक्त मास आने के पूर्व से ही सभी ऐसा उमंग भरें जैसे मुस्लिम लोग एक मास रोजा रखते हैं, हमें भी एक मास कुछ विशेष करना है। दिनचर्या को पुनः व्यवस्थित करें। ठीक समय पर सोकर अमृतवेले उठें। इस आनंद के लिए सोने से पूर्व पंद्रह-बीस मिनट अच्छे अभ्यास करके सोयें। एक मास के लिए कुछ व्रत ले लें, जो कर सकते हैं वे एक समय का भोजन छोड़ें या एक समय भोजन करके शेष फलाहार या कच्चा आहार लें। ऐसा करने से एक मास की साधना, पवित्रता की सिद्धि श्रेष्ठ बनाने में, योगी बनाने में अत्याधिक सहायक होगी। सप्ताह में हम दो बार मौन भी रखें तथा रोज़ सवेरे आठ बजे तक मौन रखें। ये व्रत, तपस्या में अति सहायक है। कम भोजन व कम बोलने से अमृतवेला बहुत सहज होगा।

### व्यर्थ मुक्त मास

व्यर्थ बातों या समाचारों में रहने वाले कभी योगी नहीं बन सकते। व्यर्थ बातों के बाद जो सुख मिलता है, वो दुःखों का आह्वान करने वाला होता है। क्या हम सब ये संकल्प ले सकते हैं कि एक मास तक न हम व्यर्थ सुनेंगे, न व्यर्थ बोलेंगे? ऐसा करने से व्यर्थ संकल्प स्वतः ही समाप्त हो जायेंगे। कुछ लोग इसमें बोर भी हो सकते हैं, परंतु यदि सारा दिन कुछ अच्छी साधना करेंगे तो विशेष आत्मबल प्राप्त होगा। जिन्हें भी विजय रत्न बनने की इच्छा है, वे यह संकल्प करें। व्यर्थ में तो सारा संसार ही जी रहा है, व्यर्थ में तो हमने पच्चीसों वर्ष गंवायें, अब साधना करें।

### अशरीरीपन व स्वमान की साधना करें

हमने बाबा में हमेशा ही देखा कि अशरीरीपन व स्वमान की साधना बहुत ही ज़्यादा थी। गहन अनुभव करें कि मैं आत्मा इस देह से न्यारी हूँ... मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ... इस देह में अवतरित हूँ। अपना चमकता हुआ तेजस्वी स्वरूप देखें व अनुभव करें। हम सिर्फ बिन्दी ही नहीं... अति प्रकाशमान... अति तेजस्वी हैं। ये अभ्यास अमृतवेले भी हो, व सारे दिन में कम से कम दस-पंद्रह बार अवश्य करें। मैं फरिश्ता हूँ... मुझे देवता बनना है। यह फरिश्ता सो देवता का अभ्यास पाँच-पाँच बार सवेरे-शाम करें। इसमें महसूस हो कि मैं फरिश्ता सूक्ष्मवतन में हूँ... वहाँ अनेक फरिश्ते हैं... फिर मैं देवता देवलोक में हूँ...। अभ्यास करने से वो दोनों फीलिंग स्पष्ट होने लगेगी। अशरीरीपन के अभ्यास के साथ ही स्वमान हमारे मूल-संस्कारों, शक्तियों व गुणों को जागृत करता है। स्वमान पर यदि चिंतन भी हो तो सोने पे सुहागा। चिंतन करने से अंतर्मन स्वीकार करेगा कि मैं ये ही हूँ।

हमारी दुआएं दूसरों के चित्त को शांत करती हैं। हमारी जड़-मूर्तियां भी दूसरों को शांति दे रही हैं। हमारी शुभ-भावनाएं अनेकों को सहारा देती हैं। शुभ-भावना मंसा सेवा का नैचुरल स्वरूप है। यदि हमें कोई अशुभ-भावनाएं भी देते हैं तो उन्हें दस बार शुभ-भावनायें दें तो आपसे पॉज़िटिव एनर्जी उन्हें जायेगी और उनकी नेगेटिव एनर्जी आप तक नहीं आयेगी। क्षमा करना शक्तिशाली आत्मा की पहचान है।

इस तरह जनवरी मास में हम कुछ बातें साधना के रूप में ले लेते हैं तो अवश्य ही हमारा जो शुभ-संकल्प है वो साकार होगा और हम भी ब्रह्मा बाबा की तरह तपस्वी व योगी बन सकेंगे। करेंगे ऐसा सभी? ऐसे मौके को अलबेलेपन के वश होकर छोड़ न दें। बस... दृढ़ता के साथ हमें करना ही है, इस अवसर को श्रेष्ठ स्वरूप के साथ आकार देना ही है।

# असंभव को संभव कर दिखाया बाबा ने

**ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा ने टच किया और ब्रह्मा बाबा ने उस संकल्प में थोड़ा भी संशय नहीं लाया। क्या होगा, कैसे होगा.....**

बाबा को हम सबने दिल से कहा कि बाबा, हमें आप जैसा बनना ही है। बनना ही है- यही आवाज़ है हम सभी की। बनेंगे, देखेंगे, सोचेंगे, पता नहीं बन सकेंगे या नहीं बन सकेंगे, ऐसा तो नहीं? जिसमें दृढ़ता सफलता की चाबी है। बाबा ने हम सबको ऐसी चाबी दी है, भले उसे जादू की चाबी कहो। अगर दृढ़ता है तो सफलता है ही।

साक्षात्कारमूर्त तब बनेंगे जब साक्षात् बाप समान बनेंगे। तो आप देखो, बाबा की सबसे पहली-पहली विशेषता क्या रही? ब्रह्मा बाबा को शिव बाबा ने टच किया और ब्रह्मा बाबा ने उस संकल्प में थोड़ा भी संशय नहीं लाया। क्या होगा, कैसे होगा, मैं सबकुछ छोड़ तो दूं लेकिन आगे स्थापना कर सकूंगा या नहीं कर सकूंगा? ये उनके लिए नयी बात थी ना! दुनिया में द्वापर से लेकर अभी कलियुग तक जो बात किसी ने नहीं कही थी कि प्रवृत्ति में रहकर भी आप निर्विकारी रह सकते हैं, पवित्र रह सकते हैं। अभी तक भी इतने साधु, सन्त, महात्मा, मंडलेश्वर जो भी हैं, वे भी विश्वास नहीं करते हैं कि आग और कपास साथ में हों और आग नहीं लगे, ये हो ही नहीं सकता- वे ये शब्द बोलते हैं। लेकिन बाबा के प्रवृत्ति में रहने वाले बच्चे बोलते हैं कि आग और कपास साथ हैं तो भी अपवित्रता की आग नहीं लग सकती। शुरू-शुरू में सिंध-हैदराबाद में माताओं-बहनों के पवित्रता अपनाने के कारण बहुत विघ्न पड़े। बाबा को पंचायत में बुलाया गया। पंचों ने बाबा से कहा कि आप इन माताओं और कन्याओं से कहो कि पवित्र न रहें। हमारे आगे आप वायदा करो। बाबा ने कहा कि मैं यह वायदा नहीं कर सकता और इन्हें भी कह नहीं सकता क्योंकि शिव बाबा ने मुझे यही आज्ञा दी है कि तुमको पवित्र बनकर, पवित्र दुनिया की स्थापना करनी है। इस ईश्वरीय ज्ञान का फाउण्डेशन ही यही है और मैं कहूँ कि पवित्र नहीं बनो तो पवित्र दुनिया स्थापन होगी कैसे! मैं यह नहीं कह सकता हूँ। मुझे शिव बाबा का डायरेक्शन है, मैं उसको टाल नहीं सकता। ऐसा निश्चय है! इतनी हिम्मत चाहिए ना! बाबा को ज़रा भी संशय नहीं आया। बाबा इतना बड़ा जौहरी था। जब सबकुछ यज्ञ में समर्पित कर दिया तो कभी सोचा कि मेरे परिवार का क्या होगा! मेरी प्रतिष्ठा का क्या होगा! मेरा इतना बड़ा परिवार है, सबकुछ समर्पण कर दिया तो वे भूखे तो नहीं मरेंगे! ऐसा कुछ भी नहीं सोचा। उनमें यही लगन थी कि बाबा जो कहता है मुझे वैसा ही करना है। इसको कहा जाता है निश्चय। आपके आगे एग्ज़ाम्पल है। आज इतना बड़ा पवित्र प्रवृत्ति वाला ब्राह्मण परिवार है। लेकिन उस समय ब्रह्मा बाबा अकेला था, उनके आगे कोई दृष्टांत, एग्ज़ाम्पल नहीं था। नयी बात थी। इतनी नयी बात कि लोग असम्भव मानते थे। उस असम्भव को बाबा ने सम्भव बनाकर दिखाया। संकल्प मात्र में भी, स्वप्न मात्र में भी बाबा को संशय नहीं आया। इसको कहते हैं बाप समान। बाप समान बनना माना साक्षात् बाबा बनना। तभी हम साक्षात्कारमूर्त बन सकते हैं।

# पहली बार बाबा ने कहा... रुक जाओ!

18 जनवरी से पहले मैं गामदेवी मुम्बई सेवाकेन्द्र में रहती थी। बाबा से मिलने मैं पार्टी लेकर मधुबन आयी। उस समय दीदी इलाहाबाद के कुम्भ मेले में गयी थी। जब मैं यहाँ(मधुबन) आयी तो बाबा ने कहा, बच्ची, तुम अभी आयी हो, दो-चार दिन रुक जाना। बाबा कभी भी मुझे दो दिन से ज़्यादा नहीं रहने देते थे। कभी मैं कहती थी, बाबा, मैं चार-पाँच दिन रहूंगी, तो बाबा कहते थे, क्यों, कोई सेवा नहीं है क्या? यहाँ से बादल भरके जाओ और वहाँ बरसो। जब बाबा ने खुद कहा कि दो-चार दिन रह जाओ तो मैंने कहा, जी बाबा। बाबा ने कहा, बच्ची, पार्टी को जाने दो, दीदी भी नहीं है, थोड़े दिन रह जाओ। 18 जनवरी की सुबह बाबा ने मुरली नहीं चलायी। सवेरे से ही बाबा का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यज्ञ के इतिहास में बाबा के तपस्वी जीवन में केवल यह एक ही दिन था जब बाबा ने प्रातः की मुरली नहीं चलायी थी परन्तु वे उस दिन सर्वोच्च स्थिति में स्थित थे। जब हमने डॉक्टर को बुलाने के लिए कहा तो बाबा ने उसी मस्ती में कहा था कि "बच्ची, डॉक्टर क्या करेगा, मैं तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा हूँ।" उस दिन बाबा ने कहा, लाओ, आज बच्चों को पत्र लिखूँ। बाबा के हाथ में थी वह लाल कलम, जिसके सुन्दर अक्षर सभी के दिलों को खींच लेते थे। बाबा ने सभी पत्रों के उत्तर दिये। बाबा ने लिखा था, "बच्चे, सदा एक मत होकर चलना है, एक की याद में रहना है और सदा शक्तियों को आगे रखना है तब ही सेवा में सफलता होगी।" ये अंतिम पत्र कई बच्चों ने अपने दिल में छुपा कर रख लिये। दिन में बाबा अंगुली पकड़कर मुझे मधुबन का आंगन घुमाते रहे। उस समय ट्रेनिंग सेंटर बन रहा था, बाबा अंगुली पकड़कर दिखा रहे थे। दिन का भोजन कर बाबा ने विश्राम भी किया। शाम के समय कोई पार्टी आयी थी, बाबा उनसे भी मिले। फिर उस दिन बाबा ने कहा, आज रात का भोजन थोड़ा जल्दी कर देते हैं। उस दिन बाबा ने रात 7:30 पर भोजन किया। वैसे तो रोज़ 8:30 बजे भोजन करते थे। भोजन के बाद बाबा रात्रि क्लास में भी आये। क्लास में बाबा ने शिक्षाओं भरी मधुर मुरली सुनायी। उस दिन बाबा आठ बजे ही क्लास में आये और साकार रूप के वे अंतिम महावाक्य तो दिल में समाने जैसे हैं। बाबा ने कहा था - "बच्चे, सिमर सिमर सुख पाओ, कलह क्लेश मिटें सब तन के, जीवनमुक्ति पाओ।" "बच्चे, निंदा हमारी जो करे, मित्र हमारा सोई। तुम्हें किसी की निन्दा नहीं करनी और किसी से वैर विरोध भी नहीं रखना।" इस प्रकार, याद की यात्रा पर बल देते हुए यज्ञ पिता बाबा खड़े होकर गेट की ओर चले और फिर गेट पर रुक गये और बोले, "बच्चे, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी बनो। जैसे बेहद का बाप सम्पूर्ण व सदा निर्विकारी है, सदा निराकार है, निरहंकारी है वैसे ही बच्चों को भी बनना है।" फिर उस अंतिम घड़ी के पूर्व बाबा के मुख से ये शब्द निकले, "अच्छा बच्चे, विदाई।" ये शब्द बाबा ने केवल उसी ही रात बोले थे, जब बाबा साकार तन से बच्चों से सदा के लिए विदा होने जा रहे थे। वरना बाबा, सदा बच्चों को रात्रि को गुड नाइट ही कहा करते थे। मुरली सुनाने के बाद बाबा अपने कमरे में गये। हम चार बहनें बाबा के साथ गईं। तब बाबा के चेहरे पर सम्पूर्ण शांति व दिव्यता झलक रही थी। बाबा चारपाई पर नीचे पैर करके बैठे थे, तब उस अंतिम घड़ी में, मेरा हाथ बाबा के हाथ में था। बाबा मुझे दृष्टि दे रहे थे। दृष्टि देते ही बाबा शरीर से उड़ चले और मेरे हाथ में बाबा का हाथ ढ़ीला पड़ गया। मुझे ऐसा आभास हुआ था कि बाबा मुझे हाथ में हाथ देकर अपनी सम्पूर्ण शक्तियां व उत्तरदायित्व दे गये। और इसीलिए बाबा ने मुझे पहली बार मधुबन में रुकने को कहा था।

# बाबा से जो पाया वो सब दूसरों को दिया

मैंने देखा कि वे एक सच्चे पिता थे। उनसे सभी को पितापन का आभास होता था। हम उनके द्वारा ईश्वरीय ज्ञान सुनकर उत्पन्न हुए, इसलिए हम उनकी मुख सन्तान कहलाये। उनके अव्यक्त होने के बाद जो उनके बच्चे बने, उनके लिए बाबा प्रजापिता है और जो उन्हें अन्त में पहचानेंगे, वे उन्हें जगतपिता कहेंगे। हमें महसूस होता है कि थोड़े ही समय में समस्त विश्व उन्हें जगतपिता मानेगा अपने अनुभवों के आधार पर। मुझे उनसे बार-बार प्रेरणाएं मिली हैं कि जैसी भासना हमें बाबा ने दी वैसे ही भासना हम दूसरों को दें। जैसे बाबा ने हमें पालकर बड़ा किया, वैसे ही हम दूसरों को पालना देकर बड़ा करें। भले ही हम जगत-पिता तो नहीं हैं, परन्तु हैं तो उन्हें फॉलो करने वाले उनके ही महान बच्चे...। दूसरी मुख्य बात मैंने बाबा में देखी कि बाबा में तनिक भी कर्तापन का भान नहीं था। बाबा सदा कहते थे कि सबकुछ शिव बाबा ही करता है या बच्चे करते हैं। अपने को सदा ही छुपाए रखना व बच्चों को स्वमान देना- यही मानवता हमने बाबा से सीखी। मुझे इस बात का सदा ख्याल रहता है कि कर्तापन का तनिक भी भान न आये। हमें बाबा ने सिखाया कि शिव बाबा से ईमानदार कैसे रहना चाहिए। सम्पूर्ण सम्पत्ति का चाहे वह उनकी स्वयं की थी या अन्य आत्माओं ने यज्ञ में दी थी वे उसके सम्पूर्ण ट्रस्टी थे। यही विशेषता उन्होंने हमें सिखाई। इसी ईमानदारी से हमारा सारा व्यवहार सरल हो गया, हम भगवान के समीप आ गये और हमारी अधीनता भी समाप्त हो गई।

मैंने ज्ञान मंथन करने की मुख्य विशेषता बाबा से सीखी। शिवबाबा के ज्ञान पर मंथन कैसे करें ताकि अपनी बुद्धि का ज़रा भी अहंकार न रहे... यह बात बाबा में प्रत्यक्ष देखी। बाबा ने हमें सिखाया कि आपस में अलौकिक वातावरण कैसा होता है, अलौकिक भाषा कैसी होती है तथा अलौकिक सम्बन्ध कैसा होता है। जब भी बाबा के पास जाते- ये तीनों बातें स्पष्ट देखने में आती थीं। बाबा के पास किसी भी तरह की लौकिकता नज़र नहीं आती थी। वास्तव में लौकिकता से दिव्यता मिस हो जाती है। बाबा ने हमें सिखाया कि हम संसार में कैसे रहें, शिवबाबा से कैसे रहें, अपने से कैसे रहें, अपने को कैसे रखे और अपना स्वमान कैसे रखें। रूहानियत भी हो... नारायणी नशा भी हो। बाबा को सदा ही हमने पूरी अथॉरिटी में देखा। परिस्थितियों में बाबा कहते थे कि तुम डरो नहीं। सब बाबा के ही बच्चे हैं। इस प्रकार बाबा ने हमें अति निर्भय बना दिया। बाबा अपनी एनर्जी वेस्ट नहीं होने देते थे। सदा यही संकल्प रखते थे कि मेरी एनर्जी सभी को मिलती रहे। बाबा अन्दर ही अन्दर शिवबाबा से एनर्जी खींचते रहते थे। सेवा के लिए बाबा ने हमें बहुत कुछ सिखाया। समानता में रहने का बीज डाल दिया, हिम्मत से भरपूर कर दिया, आध्यात्मिक शक्ति भर दी जो कि आज विश्व सेवा में काम आ रही है। आज दुनिया में अनेक आत्माएं सत्य की प्यासी हैं, हमें रहता है कि इन्हें कुछ दें। बाबा ने कूट-कूट कर भर दिया है कि सेवा में अनासक्त वृत्ति ही सफलता का आधार है। मुझे कभी फल देखने की इच्छा नहीं होती कि हमने जो सेवा की उसका फल क्या निकला। बाबा ने सिखा दिया कि डाला हुआ बीज कभी निष्फल नहीं जाता। भगवान के दर पर कोई भी अभिमान नहीं रख सकता, बाबा ने अपनी निर्मानता से हमें यही सिखाया। और अब स्मृति दिवस ज्यों-ज्यों समीप आता है, बाबा का सम्पूर्ण चित्र सामने स्पष्ट हो जाता है, उनका प्यार श्रेष्ठ प्रेरणाएं देता रहता है। ऐसे सच्चे पिता पर ये मन कुर्बान है।

OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 3



# बाबा में था अलौकिक आकर्षण

दादी चन्द्रमणि

**"बाबा अपनी सूक्ष्म शक्तियों को संजोते थे, संवारते थे। अपने मन, बुद्धि और स्मृति को चेक करते और नोट करते थे कि कहाँ-कहाँ मेरी ये शक्तियां जा रही हैं... बारीकी से नोट कर उसपर तपस्या करते और शिव बाबा की शिक्षाओं के अनुरूप उन शक्तियों को ढ़ालते थे।"**

ब्रह्मा बाबा का लौकिक नाम दादा लेखराज था। वे हीरे-जवाहरात का धंधा करने वाले, पक्के पुजारी और अति भक्ति करने वाले थे। उन्होंने अनेक गुरू भी किये थे। उन्हें विचार आया कि मैं तपस्या करूँ। व्यापार के झूठे धंधे में क्यों फँसू! उनको बेहद का वैराग्य अन्दर में पैदा हुआ। पहले-पहले उन्होंने अपने मन को समझाया। मन को एक बच्चे के रूप में देखा। उन्होंने सोचा, यह मन तो यहाँ-वहाँ घूम रहा है... कभी पोज़ीशन में, कभी सम्बन्धों में, कभी दुनिया के कई प्रकार के वैभवों में। उन्होंने शुरू से ही अपने मन को समझाने की कोशिश की। हे मन! तू कहाँ जा रहा है? मन से रूह-रिहान की। हे मेरे मन! तू कहाँ भटक रहा है? देह में जा रहे हो? यह देह तुमको सुख नहीं दे रही, दुःख दे रही है। देह का धर्म दुःख देने वाला है। शुरू-शुरू में बाबा ने एकान्त में मन से ऐसे कई प्रकार की बातें करनी शुरू की। बनारस में एक बहुत बड़ा पेड़ था, उसके नीचे बैठ उन्होंने एकांत में तपस्या की। **जब समय आता है बदलने का, तो संकल्प भी बदलने के ही चलते हैं।** बाबा ने अपने लिए बुद्धि और स्मृति की शक्ति से धरनी बनायी। बुद्धि और स्मृति कहाँ-कहाँ जाती है, नोट किया। शिव बाबा ने उनको साक्षात्कार की लिफ्ट दी जिससे उनको दिखाया कि तू मेरा एक ही सकीलधा बच्चा है और तेरे को ही यह आसुरी वृत्ति वाली दुनिया बदलनी होगी। मैं तेरे साथ हूँ। इसलिए शुरुआत में ही बाबा को साक्षात्कार हुए कि कौन-सा समय चल रहा है और क्या करना है, क्या नहीं करना है। इस पुरानी दुनिया का विनाश कैसे होना है, वो दृश्य बाबा ने साक्षात्कार द्वारा देखा। स्थापना नये स्वर्णिम विश्व की कैसे होनी है, उसका भी बाबा ने साक्षात्कार किया।

## तपस्या का आधार आत्मानुभूति है

शिव बाबा ने पहले-पहले तपस्या का फाउण्डेशन डाला। ब्रह्मा बाबा ने आत्मिक वृत्ति व आत्मिक दृष्टि का विशेष अनुभव किया। मैं शरीर नहीं हूँ, मैं एक ज्योतिर्बिन्दु हूँ। लाइट हूँ, माइट हूँ। वो लाइट और माइट ऊपर जा रही है। धीरे-धीरे जब उनको आत्मा की अनुभूति हुई तो उन्होंने सभी सम्बन्धियों व मित्रों को भी उसी रूप से देखना व बात करना आरंभ कर दिया।

## सूक्ष्मवतन का साक्षात्कार

कई बार मैंने बाबा को ज़मीन से आसमान तक के स्वरूप में देखा और अपने को

भी एक लाइट के आकार में देखा। ऐसे महसूस करती हूँ कि मुझे सूक्ष्मवतन का साक्षात्कार हुआ। बाबा के प्रति मेरा इतना अपनापन का सम्बन्ध जुट गया कि बाबा ही मेरी माँ है, पिता है और सबकुछ है। उस समय हमें शिव बाबा की प्रवेशता का ज्ञान नहीं था पर ब्रह्मा बाबा के प्रति एक अलौकिक आकर्षण था। उनकी अव्यक्त स्थिति और रुहानियत ने हमको खींचा। लौकिक परिवार के साथ हमने बाबा को कभी भी देह के सम्बन्ध में नहीं देखा। चाहे बाबा की युगल थीं, चाहे बाबा की बहू थी, चाहे बाबा के बच्चे थे, उनसे भी बाबा ऐसे ही बात करता था जैसे कल्याणार्थ हमसे करता था इसलिए बाबा का घर ऐसा लगा ही नहीं कि यह कोई गृहस्थी का घर है। वो हमें शुरू से ईश्वरीय परिवार दिखाई दिया।

## गहन शान्ति का अनुभव

बाबा जब ओम की ध्वनि करते थे तो हम डीप साइलेन्स में चले जाते थे। हमारे अंदर कोई छोटा-मोटा पुराना संस्कार था भी तो वह उस साइलेन्स के गहन अनुभव से बहुत जल्दी समाप्त हो गया। फिर निश्चय हो गया कि जो बाबा श्रीमत दे रहे हैं, उसी पर चलना है। जब मैं छोटी थी तो स्वतंत्र विचारों की थी, अपने विचारों का महत्व रखती थी कि जो कहूँ वही हो। पर यहाँ जब बाबा की श्रेष्ठ मत को प्यार से समझा तो मैंने मनमत को ईश्वरीय मत से बदल दिया। दृढ़ निश्चय किया कि चलेंगी तो ईश्वरीय मत पर ही चलेंगी, ईश्वरीय मत ही सबसे श्रेष्ठ है। कितने भी विघ्न आएं, मुझे ईश्वरीय गुणों और शक्तियों को धारण करना ही है।

"ओम" शब्द सर्वत्र - बाबा हमको सदा ओम शब्द से बुलाते थे जैसे ओम रामा, ओम मोती आदि और हम कहते थे, ओम बाबा, ओम राधे। ओम माना पहले आत्मा का परिचय आ जाता था। ओम माना मैं पवित्र आत्मा। बाबा हमेशा कहता था, आत्मा की स्मृति से एक-दो को बुलाओ और आत्मा की स्मृति से ही बातचीत करो। "जशोदा निवास" बाबा की बिल्डिंग का नाम था। यह बाबा की युगल के नाम पर था। ओम शब्द लगाने से उसका नाम ओम मण्डली पड़ गया। दूसरी बिल्डिंग जो होस्टल थी, उसका नाम "ॐ निवास" इसलिए पड़ा क्योंकि बिजली का एक बहुत बड़ा 'ॐ' बिल्डिंग के ऊपर लगाया गया था जो सारे शहर में दिखाई देता था। बड़े अर्थ से इन दोनों भवनों के नाम रखे गये थे। बाबा जो भी कार्य करते थे, जो भी बोल बोलते थे उनके हर बोल और कर्म में अर्थ समाया होता था।

# ऐसे थे हमारे ब्रह्मा बाबा...

स्वयं ज्ञान सागर, त्रिकालदर्शी परम आत्मा ने जिन्हें आदि पुरुष प्रजापिता ब्रह्मा कहकर सम्मानित किया। अपनी दृढ़ता, पवित्रता व तपस्या के बल से जिन्होंने अनेकों को जीवन दान दिया। रूद्र द्वारा स्थापित ज्ञान-यज्ञ में जिन्होंने अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया और यज्ञ पिता बनकर यज्ञ को सफल किया। जिनकी दृष्टि दूसरों को देहभान से न्यारा कर देती थी। जो विदेही स्वरूप में रहकर इस संसार में ऐसे रहे मानो यहाँ रहते ही न हों। वे देह में रहते हुए भी ऐसे रहे मानो देह में हों ही नहीं। उनके त्याग व वैराग्य की अनेक कहानियाँ यज्ञ-वत्सों में बहुचर्चित थी। ऐसे महान पुरुष थे वे जिन्हें स्वयं निराकार त्रिमूर्ति शिव ने अपना

माध्यम बनाया और उनके तन में प्रवेश करके सत्य ज्ञान का रहस्योद्घाटन किया। वे 93 वर्ष की आयु में अव्यक्त हुए। इतनी आयु तक सीधे चलते थे, सीधे बैठते थे और बैडमिंटन खेलते थे। इतनी आयु में भी वृद्धावस्था के लक्षण उनके पास नहीं फटकते थे और उनकी गति को मंद नहीं करते थे। उन्होंने पवित्रता व दिव्यता की नींव इतनी गहरी रखी जो आज उनकी राहों पर लाखों लोग आगे आये। कर्म और व्यवहार में उन्हें स्वार्थ स्पर्श तक नहीं कर सका। ऐसी महान आत्मा की कुछ महानताएं हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं...

## वे महान कर्मयोगी थे

वे कर्म करते हुए कर्मातीत थे। कर्मयोगी केवल वे नहीं होते जो कर्मठ हों या जो समाज सेवा के क्षेत्र में कार्यरत हों। कर्मयोगी उन्हें कहा जाता है जो कर्म करते हुए भी योगयुक्त रहते हों। जिनके मन में कर्म की छाया तनिक भी न रहती हो। जो निष्काम हों तथा कर्मबंधन से मुक्त रहते हों। वे ज्ञान-मुरली सुनाने से लेकर, दो घण्टा पत्र पढ़ने व लिखने का कार्य करते थे। सारे यज्ञ में प्रतिदिन चक्कर लगाते थे। सब कारोबार का संचालन करते थे। रात्रि क्लास कराने के बाद वे सभी वत्सों के कक्ष में जाया करते थे, यह देखने के लिए कि सबके पास पर्याप्त सुविधायें हैं, सब ठीक आराम से हैं। सब बच्चों को सुलाकर फिर वे स्वयं सोते थे। इन सब कार्यों में उनका निर्मल पितृवत प्रेम व हल्कापन, चेहरे की मुस्कान व रमणीकता साफ देखी जा सकती थी। वे कर्म ऐसे करते थे माना वे स्वयं कुछ न कर रहे हों, परमात्मा ही उनके द्वारा सबकुछ करा रहा हो। वे बुद्धि से सर्वदा ब्रह्मलोक में ही विचरण करते थे।

## सम्पूर्ण बनने के लिए सम्पूर्ण डेडिकेशन था

राजयोग का ज्ञान परमशिक्षक से मिलते ही वे निरंतर योगयुक्त स्थिति की ओर चल पड़े। साधक जानते हैं कि साधना का मार्ग परीक्षाओं का मार्ग है, इस पर आशा व निराशा का भी दौर चलता है, माया भी अवरोध उत्पन्न करती है परंतु उन्होंने महावीर बनकर इसके लिए स्वयं को कुर्बान कर दिया।

## नारायणी नशे में मस्त रहते थे वे

क्योंकि वे स्वयं नारायण बनने वाले थे और उन्हें इसका सम्पूर्ण नशा रहता था। उनके मुख पर भी आ जाता था कि मैं ये बूढ़ा तन छोड़कर छोटा श्रीकृष्ण बनूंगा। उनके चेहरे पर इसके हावभाव देखे जा सकते

-राजयोगी
ब्र.कु. सूर्य,मा.आबू

थे।

उन्हीं के कारण प्रभु-प्रेम में मग्न रहने वालों को नारायणी नशे में रहने वाले कहा जाने लगा। एक बार वे हॉल में अकेले ही डांस कर रहे थे। दादी जानकी ने उन्हें देख लिया। वे बोले- बच्ची, बाबा को नशा चढ़ा हुआ है कि मैं भविष्य में क्या बनने वाला हूँ! उन्हें न केवल भविष्य का नशा था बल्कि अपने गॉडली स्टूडेंट होने का, प्रभु मिलन का, प्रभु के साथ का व उनको रथ देने का भी नशा था।

## बेफिक्र बादशाह थे वे

'पाना था सो पा लिया, अब और क्या बाकी रहा', ये उनके दिल का गीत था, यही उनके जीवन का संगीत था। चाहे जीवन की अलौकिक यात्रा में कुछ भी आया हो, किसी ने उनको उदास, भयभीत, चिंतित या परेशान नहीं देखा। अनेक ब्रह्मा वत्स भी यज्ञ में विघ्न डालते थे, ग्लानि करने लगते थे, परंतु वे सदा यही कहते थे कि शिवबाबा बैठा है, वही यज्ञ का मालिक है, उसी की छत्रछाया हमारे सिर पर है, वह सब कुछ सम्भाल लेगा। यह नशा व निश्चय उन्हें सदा सभी गमों से दूर बेफिक्र बादशाह बनाये रखता था। वे यहीं सच्चे बादशाह, सिंह के समान निर्भय थे और उनका भविष्य में विश्व-महाराजन बनना तो तय ही था।

## मन निर्मल व निर्विकारी था

विश्व कल्याण की भावना से भरपूर उनका चित्त पूर्णतया निर्मल हो गया था। वे क्रोध से मुक्त पूर्णतः शांत हो गये थे। कोई यदि उनसे दुर्व्यवहार भी करता था, तो न वे आवेश में आते थे और न उनके लिए अपनी नाराज़गी ही प्रकट करते थे। सच तो यही है कि विश्व की इस प्रथम नम्बर की महानात्मा के समक्ष सभी विकारों ने आत्म-समर्पण कर दिया था। वे उनकी छत्रछाया बन गये थे। वे सम्पूर्ण निर्विकारी बन गये थे, उनके अंग-अंग से देवत्व झलकता था। जो भी उनसे मिलता, उनका सदा के लिए प्रशंसक बन जाता था।

## वे साक्षीदृष्टा व सबके सहयोगी थे

वे गुणवान तो इतने थे कि स्वयं भगवान भी उनका गुणगान करते थे। अध्यात्म की सर्वोच्च स्थिति 'साक्षीदृष्टा' उन्होंने धारण कर ली थी। उनके मन में सदा बहती थी शुभ-भावनाओं की गंगा। वे सभी को खुश व संतुष्ट करना चाहते थे। जो भी भारी मन से उनके पास आता था, वह हल्का होकर जाता था। उन्होंने आदेश दे रखा था कि जब भी कोई बच्चा उनसे मिलने आये, चाहे बाबा आराम में हों, बाबा को तुरंत सूचना देना।

सबको आगे बढ़ाने की भावना थी उनमें। वे स्वयं स्वमान में रहते थे व दूसरों को सम्मान देते थे। विशेष मातृशक्ति के लिए उनके मन में विशेष आदर भाव था। वे उन्हें सदा कहते थे कि तुम अबला नहीं, शिव शक्ति हो। सम्मान तो वे इतना देते थे कि क्लास कराकर बाहर आते बच्चों को पीठ नहीं देते थे।

- शेष पेज 4 पर

OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 4



# डर व चिंता के माहौल में सेवा भाव देगा सुकून की ऊर्जा

ब्र.कु. शिवानी,
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

**बच्चे हर सेवा खेल समझकर करते हैं क्योंकि उनमें अहम नहीं होता। पवित्रता और विनम्रता उन्हें अहमहीन बनाती है।**

**जब परिस्थिति आती है तो उसके साथ हमारे अदंर सहनशक्ति, अपने आप में बदलाव लाने की शक्ति स्वतः आ जाती है। ये सबूत है कि ये सारी शक्तियां हमारे अंदर ही हैं। हम सिर्फ इनका इस्तेमाल नहीं कर रहे थे।**

**बचपन से सिखाते हैं कि एक हाथ से दान करो, तो दूसरे को पता न चले। मतलब किसी को दिखावे के लिए हम सेवा नहीं कर रहे।**

सेवा करने का एकमात्र उद्देश्य देना होता है। इसलिए बचपन से सिखाया जाता है कि एक हाथ से दान करो, तो दूसरे हाथ को पता न चले। मतलब किसी को दिखावे के लिए, किसी से कुछ पाने के लिए, हम सेवा नहीं कर रहे। तभी हमें सेवा की शक्ति मिलती है। गुप्त सेवा मतलब निःस्वार्थ सेवा। यदि हम निमित्त भाव रख निर्माण भाव और निर्मल वाणी से सेवा करेंगे तो इससे हमारी आत्मा की शक्ति बढ़ेगी और जिनकी हम सेवा कर रहे हैं उनकी भी शक्ति बढ़ेगी। सिर्फ खाना खिलाना, घर का काम करना या बाहर जाकर औरों को खाना खिलाने की सेवा नहीं हो रही, बल्कि खाना खिलाते सुकुन और शक्ति देने से सेवा हो रही है। यदि आपने अच्छे भाव से दिया तो आपकी मंशा आपके खाने के साथ सामने वाले को मिलती है। आपके द्वारा दिया हुआ धन सामान लाता है लेकिन आपकी शुद्ध मंशा आत्मा की शक्ति बढ़ाती है। तो इससे दो चीज़ें साथ चल रही हैं। एक जो हम बाहर कर रहे हैं और दूसरी जिस भावना से कर रहे हैं। आज हम चिंता और डर के माहौल में जी रहे हैं, तो हमें खाने के साथ उनको सुकुन की ऊर्जा भी देनी है। जब आप लोगों को भोजन खिलाएं, तो इस भाव से कि हम परमात्मा का प्रसाद खिला रहे हैं।

हमें चिंता नहीं करनी है क्योंकि इससे सेवा की अपोजिट एनर्जी चली जाती है। हमें समाज से डर और चिंता खत्म करनी है। जो निमित्त होगा उसके मन में ये बात नहीं आएगी कि कल आटा कहां से आएगा, धन कहां से आएगा। आप सिर्फ यही कहना कि मैं परमात्मा का निमित्त मात्र सेवाधारी हूँ, वो किसी न किसी को भेज देगा और सेवा हो जाएगी। जब हमारी मंशा अच्छी होती है तो पता नहीं कहां-कहां से लोग आते हैं और सेवा हो जाती है।

आजकल देखो छोटे-छोटे बच्चे भी खाना बना रहे हैं और सेवा कर रहे हैं। वही छोटे-छोटे बच्चे जिनके लिए उनके पेरेंट्स कहते थे कि ये तो कुछ करते ही नहीं है। आज वही बच्चे आटा गूंथ रहे हैं, रोटी बना रहे हैं, केक बना रहे हैं, झाड़ू-पोछा कर रहे हैं, गार्डन ठीक कर रहे हैं। जब परिस्थिति आती है तो उसके साथ हमारे अंदर सहनशक्ति, अपने आप में बदलाव

लाने की शक्ति स्वतः आ जाती है। जो कि ये सबूत है कि ये सारी शक्तियां हमारे अंदर ही हैं। हम सिर्फ उनका इस्तेमाल नहीं कर रहे थे। ये बच्चे आज इतनी सेवा क्यों कर रहे हैं क्योंकि इस समय हवा में सेवा के वायब्रेशन हैं।

बच्चे हर सेवा को खेल समझकर करते हैं क्योंकि उनके अंदर अहम नहीं होता। उस बच्चे ने अपने जीवन में अभी कुछ प्राप्त नहीं किया है। वो पवित्रता और विनम्रता उन्हें अहमहीन बनाती है। ये जो बच्चे इस समय अपने पेरेंट्स की सेवा कर रहे हैं, यह हमें सबूत देता है कि अगर हम बच्चे को कुछ सिखाना चाहते हैं, उनमें अच्छे संस्कार डालना चाहते हैं तो इसका सबसे आसान तरीका है कि बच्चे को शुरूआत से ही ये सबकुछ सिखाना शुरू कर देना चाहिए।

कई बार पेरेंट्स कहते हैं कि बच्चे ध्यान नहीं करते, योग नहीं करते, उन्हें ये सबकुछ सिखाने का आसान तरीका है कि आस-पास के लोग ये करना शुरू कर दें तो उन्हें देखकर बच्चे अपने आप शुरू कर देंगे। और दूसरी बात कि बच्चों में बड़ों की अपेक्षा एडजस्ट करने की शक्ति ज़्यादा होती है। क्योंकि अभी उनके संस्कार बहुत नरम होते हैं, जिन्हें कैसे भी ढ़ाल सकते हैं। तो बच्चों के अंदर कोई भी परिवर्तन लाना सहज हो जाता है। घरेलू कार्यों में सहायता करना भी सेवा है। तो बच्चे घर के छोटे-छोटे कार्यों में सहायता करके भी सेवा का बल जमा कर लेते हैं।

माँ के गर्भ में जो बच्चा या जो आत्मा होती है, उसके ऊपर पेरेंट्स के वायब्रेशन का सबसे ज़्यादा प्रभाव पड़ता है। बच्चे बड़े के वायब्रेशन को बहुत जल्दी कैच करते हैं। तो उन पेरेन्ट्स को इस समय बहुत ध्यान रखना होगा कि मन में डर, चिंता के ऐसे कोई विचार नहीं लाने हैं, जिसका प्रभाव उस बच्चे पर पड़ रहा हो। आप उनको सिर्फ यही वायब्रेशन भेजिए कि आप बहुत सुंदर दुनिया में आने वाले हो, देखो सब कितना सहयोग करते हैं, हरेक एक-दूसरे के लिए हैं, सेवा भाव सबके अंदर कूट-कूट कर भरा है, हरेक परमात्मा का फरिश्ता है। आप भी भगवान का एक फरिश्ता हो जो हमारे घर में आ रहे हो। बस ऐसा ही सोचना, बोलना है। जब वो बच्चा आएगा तो इस सृष्टि के लिए एक फरिश्ता आएगा।

# कथा सरिता

एक नगर में रहने वाले एक पंडित जी की ख्याति दूर-दूर तक थी। पास ही के गाँव में स्थित मंदिर के पुजारी का आकस्मिक निधन होने की वजह से, उन्हें वहाँ का पुजारी नियुक्त किया गया।

एक बार वे अपने गंतव्य की ओर जाने के लिए बस में चढ़े, उन्होंने कंडक्टर को किराए के रुपये दिए और सीट पर जाकर बैठ गए।

कंडक्टर ने जब किराया काटकर उन्हें रुपये वापस दिए तो पंडित जी ने पाया कि कंडक्टर ने दस रुपये ज़्यादा दे दिए हैं। पंडित जी ने सोचा कि थोड़ी देर बाद कंडक्टर को रुपये वापस कर दूंगा।

कुछ देर बाद में विचार आया कि बेवजह दस रुपये जैसी मामूली रकम को लेकर परेशान हो रहे हैं, आखिर ये बस कंपनी वाले भी तो लाखों कमाते हैं, बेहतर है इन रुपयों को भगवान की भेंट समझकर अपने पास ही रख लिया जाए। वह इनका सदुपयोग ही करेंगे। मन में चल रहे विचारों के बीच उनका गंतव्य स्थल आ गया। बस से उतरते ही उनके कदम अचानक ठिठके, उन्होंने जेब में हाथ डाला और दस का नोट निकाल कर कंडक्टर को देते हुए कहा, "भाई, तुमने मुझे किराया काटने के बाद भी दस रुपये ज़्यादा दे दिए थे।"

कंडक्टर मुस्कुराते हुए बोला, "क्या आप ही गाँव के मंदिर के नए पुजारी हैं?" पंडित जी के हामी भरने पर कंडक्टर बोला,"मेरे मन में कई दिनों से आपके प्रवचन सुनने की इच्छा थी, आपको बस में देखा तो ख्याल आया कि चलो देखते हैं कि मैं अगर ज़्यादा पैसे दूँ तो आप क्या करते हो... !

अब मुझे विश्वास हो गया कि आपके प्रवचन जैसा ही आपका आचरण है। जिससे सभी को सीख लेनी चाहिए" बोलते हुए, कंडक्टर ने गाड़ी आगे बढ़ा दी।"

पंडित जी बस से उतरकर पसीना-पसीना थे। उन्होंने हाथ जोड़कर भगवान का आभार व्यक्त किया, "प्रभु तेरा लाख-लाख शुक्र है जो तूने मुझे बचा लिया, मैंने तो दस रुपये के लालच में तेरी शिक्षाओं की बोली लगा दी थी। पर तूने सही समय पर मुझे सम्भलने का अवसर दे दिया।"

कभी-कभी हम भी तुच्छ से प्रलोभन में आकर अपने जीवन भर की चरित्र पूंजी दांव पर लगा देते हैं। और कहते भी हैं ना स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और चरित्र गया तो सबकुछ गया।

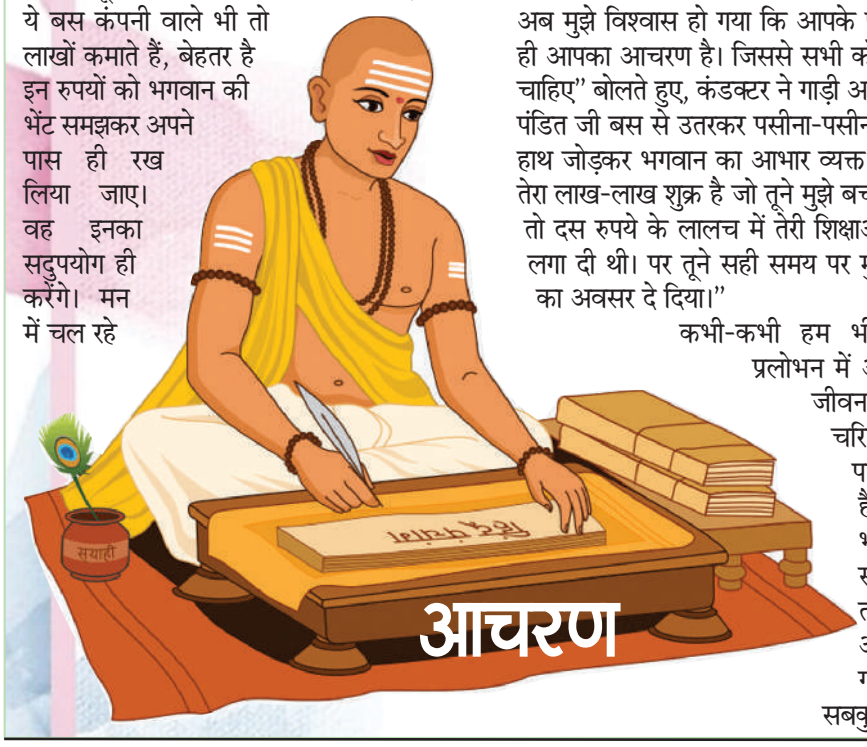

सिरोही-राज.। सिरोही के महाराजा रघुवीर सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अरुणा दीदी,सिरोही, ब्र.कु. दीपक व ब्र.कु. चंदन,शांतिवन तथा अन्य।

## ऐसे थे ब्रह्मा बाबा....

- पेज 3 का शेष

### परमात्म-प्यार में मग्न रहते थे

परमात्म प्यार में वे स्वयं को भूले रहते थे। अंतिम दिन भी जब उनसे पूछा कि बाबा, क्या डॉक्टर को बुलायें (बाबा को छाती में थोड़ा दर्द था) उन्होंने नशे में उत्तर दिया था- बच्चे, बाबा तो सुप्रीम सर्जन से बातें कर रहा है, डॉक्टर आकर क्या करेगा। अंतिम दिन वे ईश्वरीय नशे में खोये हुए व परमात्म-प्यार में मग्न थे। जितना प्यार उनका परमपिता से था, उतना ही प्यार उनके यज्ञ व उनकी ज्ञान मुरली से था। एक भी दिन उन्होंने क्लास मिस नहीं की थी। मुरली सुनाते हुए वे ज्ञान-डांस करते थे। वह उनका परम प्रियतम जो था। इस प्रभुप्रेम में वे संसार भूले रहते थे।

### उनके वायब्रेशन्स पूर्णतः अलौकिक व सम्पूर्ण पवित्र थे

लोग उनके पास समस्याएं लेकर आते थे और मुक्त होकर जाते थे। रोते आते थे और हँसते जाते थे। भारीपन लेकर आते थे और हल्के होकर, प्रसन्न होकर बाहर निकलते थे। सभी का अनुभव होता कि जाकर बाबा से ये ये पूछेंगे परंतु वहाँ जाते ही मन इतना शांत हो जाता था कि या तो प्रश्न करना ही भूल जाते थे या स्वतः ही उत्तर पा लेते थे। बात सन् 1968 जून की है। बाबा अकेले एकांत में झोपड़ी में विराजमान थे। मैं बगीचे के बाहर खड़ा देख रहा था। ऐसा आभास हो रहा था कि यहाँ कोई महान तपस्वी बैठा है। झोपड़ी से जैसे कि शांति के सागर की शांति की लहरें चारो ओर फैल रही थीं। जिसको वे दृष्टि दे देते थे उनका चित्त शांत हो जाता था।

### वे अति शक्तिशाली व महान लीडर थे

वे समस्याओं के आगे नहीं झुकते थे, वे समय की धारा को भी बदलने की शक्ति रखते थे। समय उनके आगे समर्पित हो गया था। सर्वशक्तिवान के बाद शक्ति सम्पन्न आत्मा में उनका ही स्थान है। कुछ भी हो गया, उन्होंने अपनी स्थिति को एकरस रखा। ऐसी दिव्य आभा से सम्पन्न थे बाबा हमारे... जिनके चरित्र में चमकता था सम्पूर्ण देवत्व...जिनका हर कर्म उनके पुण्यों की कहानी कहता था... जिनके मुख से सदा वरदान निकलते थे...जिनके सिर पर वे हाथ रख देते थे, उनके भाग्य का सितारा चमकने लगता था, उनके बुरे दिन समाप्त हो जाते थे, उनके बिगड़े हुए काम बन जाते थे...उनके जीवन से काले बादल छँट जाते थे। ऐसे थे हमारे अलौकिक पिता ब्रह्मा बाबा।

OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 5



# परमात्म प्यार से पत्थर भी हो जाता पारस

- ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

प्यार का चुम्बक, ये कहा तो परमात्मा के लिए गया है, लेकिन हम सभी आत्माओं को भी ऐसा चुम्बक बनना है बाप के जैसा। क्यों बनना है, क्योंकि तभी तो हम बाप का साक्षात्कार सारे संसार की आत्माओं को करा सकेंगे। तभी दुनिया की आत्मायें भी ईश्वर की वाह-वाह गायेंगी और वाह-वाह गाते यही कहेंगी कि वाह ईश्वर तेरी लीला अपरमअपार है। तुमने कैसे-कैसे को क्या से क्या बना दिया! तो ये साक्षात्कार दुनिया के अन्दर परमात्म जयजयकार का आधार है। परमात्म प्रत्यक्षता का आधार है। बाबा को अगर हम देखें तो बाबा कितना निःस्वार्थ भाव से हमको प्यार करते हैं। मैं आज सोच रही थी कि परमात्म शक्ति अथॉरिटी है लेकिन अथॉरिटी होने के बावजूद भी वो अपनी अथॉरिटी यूज़ नहीं करते। प्यार इसी का नाम है जो स्वतंत्रता देते हैं। प्रेरणा ज़रूर देते हैं लेकिन प्रेरणा देने के साथ-साथ स्वतंत्रता भी है और इसीलिए नम्बरवार हैं। आज जैसे दुनिया के अन्दर माँ-बाप बच्चों के ऊपर अपना अधिकार रखते हैं। और अधिकार के कारण जैसे उनको बाध्य कर देते हैं कि आपको ऐसे ही चलना होगा, ऐसा ही करना होगा। और इसीलिए वो प्यार एक ऐसा बन्धन का रूप बन जाता है कि बच्चे उस बन्धन को अच्छा नहीं समझते और उस बन्धन से मुक्त होना चाहते हैं। तो कभी कभी माँ-बाप को बहुत दुःख और दर्द होता है कि हमारा कहना नहीं मानता है, जैसा हम चाहते हैं वैसा करता नहीं है। लेकिन बाबा अथॉरिटी होने के बावजूद भी कहीं पर भी हमें बाध्य नहीं करता है कि तुमको ऐसा ही करना पड़ेगा, ऐसा ही चलना पड़ेगा। यहाँ तक कि बच्चे अगर कैसे भी चलते हैं, और अगर बाबा को कहते भी हैं, कोई शिकायत भी करते हैं कि देखो ना बाबा, ये कैसे चलता है, श्रीमत का उल्लंघन कर रहा है। तो बाबा क्या कहते हैं, बच्चे, राजधानी स्थापन हो रही है और ऐसे कह करके हल्का कर देते हैं कि जैसे तुम भी उस बात को लेकर नहीं चलो कि उनको ऐसा करना ही चाहिए। तो इतनी बड़ी अथॉरिटी लेकिन प्रेम का सागर ऐसा है जो इतनी स्वतंत्रता देते हैं कि बच्चे तुम जो हो जैसे हो, मैंने वैसे को स्वीकार किया। तो बाबा स्वीकार कर लेता है अपने बच्चों को जो भी स्थिति में जैसे भी हैं। और उसके बावजूद भी इतना प्यार दे करके उनको जैसे मूर्तियां बनाना आरम्भ कर देता है। प्रेरणा ज़रूर देता है, शिक्षा ज़रूर देता है। रोज़ मुरली के अन्दर हमें शिक्षा ज़रूर मिलती है लेकिन फोर्स नहीं है। ये है ईश्वरीय प्यार। और इसीलिए हर बच्चा, कहाँ भी है दुनिया के अन्दर, द्वापर के बाद भी उस प्यार को याद करते हैं। और तभी भक्ति मार्ग के गाने में भी आता है कि तेरी एक बूंद के प्यासे हम। ऐसा प्यार अगर मिल जाए, बस एक बूंद भी अगर मिल जायेगी, तो वो हमारे जीवन के लिए काफी है।

दूसरी बात है निःस्वार्थता। एक तो बाध्य नहीं करता है, और दूसरी है निःस्वार्थता, निश्छलता। उस प्यार में कहीं छलने वाली बात नहीं है। उस प्यार में कहीं बाबा को अपना स्वार्थ नहीं है। लेकिन बाबा हर प्रकार का खज़ाना देते हुए भी अधिकार दे देता है कि बच्चे तुम्हें अब अपने भाग्य को लिखना है, वो कलम भी मैंने तुम्हें दे दिया। तुम जैसे भी लिखना चाहो वैसे लिख सकते हो। बाबा जब बच्चों से प्यार करते हैं तो एक्सेप्टेंस लेवल बहुत हाई है बाबा का। शायद उतना हमारा नहीं है। हर बच्चा जो है जैसा है दुनिया में कई लोग सोचते हैं कि इसको भी भगवान प्यार करता है! ऐसे को प्यार करता है! लेकिन वो भी महसूस करता है कि हाँ, भगवान का प्यार मेरे साथ है। इसीलिए उस प्यार में सहज परिवर्तन होता चला जाता है। पारस के संग में आकर कैसे हम भी पारस बनते जा रहे हैं।

- क्रमशः

## यह जीवन है

**जब हम कोई भी कार्य उमंग-उत्साह में रहकर करते हैं तो हर चीज़ आसान हो जाती है। और जब हिम्मत हार जाते हैं या आत्मविश्वास खो देते हैं, तब कोई भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। इसलिए अगर हम सफलता प्राप्त करना चाहते हैं तो परमात्मा पर भरोसा रखें और खुद पर विश्वास रखकर अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करें। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ये नियम है कि हमारे स्वयं के शुद्ध विचार ही हमारे भाग्य का निर्माण करते हैं। अगर आप विश्व को परिवर्तन करना चाहते हैं तो एक महत्वपूर्ण काम कीजिए, बस स्वयं को परिवर्तन कर लीजिए।**

## स्वास्थ्य

# सर्दी-ज़ुकाम से जल्द मिलेगी राहत

**सर्दी का मौसम हो या बेमौसम सर्दी, नाक बंद होने की समस्या हर किसी के साथ होती है। लेकिन जब बंद नाक की वजह से घुटन होने लगे, तो समस्या गंभीर हो सकती है। ऐसा न हो, इसके लिए नोट कर लीजिए कुछ आसान से उपाय ...**

### भाप की मदद

बंद नाक खोलने का यह तरीका काफी पुराना और प्रभावकारी है। इसके लिए पानी गर्म करके उसमें खुशबूदार तेल की कुछ बूंदें डाल लें या इसमें आयोडीन की कुछ बूंदें या फिर विक्स कैप्सूल भी डाल सकते हैं। बर्तन की ओर चेहरा करके भाप लें। यह नाक खोलने के साथ ही सर्दी में आराम देगा।

### छोटा व्यायाम

गहरी सांस लेकर सिर को पीछे की ओर झुकाएं और कुछ समय के लिए सांस को रोककर रखें। इसके बाद नाक खोलकर सांस लेने में आसानी होगी। इस तरीके को आप दोहरा सकते हैं।

### कपूर की महक

बंद नाक को खोलने का यह अच्छा तरीका है। आप चाहें तो इसे नारियल तेल के साथ मिलाकर सूंघ सकते हैं, या फिर सादा कपूर सूंघना भी आपको फायदा देगा। इसके अलावा नाक को गर्माहट देकर भी बंद नाक को आसानी से खोला जा सकता है।

### गरम सेंक

अगर आप कुछ नहीं कर पा रहे हैं, तो सूती रुमाल लेकर उसे खौलते पानी में डालें और निचोड़कर उसको अपनी नाक के ऊपर रख दें। दो मिनट में ही आपको आराम मिल जाएगा। रुमाल को प्रेस से भी गर्म कर सकते हैं। फिर माथे, नाक, गले की बारी-बारी सिकाई करें।

### नींबू चाय

गरम ब्लैक टी में कुछ बूंदें नींबू की निचोड़ कर पी लें। आप चाहें तो इसमें एक छोटा चम्मच शहद भी मिला लें। इसके सेवन से आपकी बंद नाक तुरंत ही खुल जाएगी।

### खायें अदरक और हल्दी, रहें हेल्दी...

**अदरक एंटीवायरल, एंटीबायोटिक और एंटीइंफ्लेमेट्री गुणों से भरपूर है। ये मौसमी संक्रमण जैसे सर्दी-ज़ुकाम और अस्थमा आदि गंभीर परेशानियों में भी राहत दिलाने में कारगर है। पर ज़्यादा मात्रा में अदरक खाना पेट में दर्द, दस्त और गैस की परेशानी पैदा कर सकता है। इसलिए प्रतिदिन अधिकतम 3-4 ग्राम अदरक का ही सेवन करें। गर्भवती स्त्रियां प्रतिदिन 1 ग्राम से अधिक सेवन न करें।**

**वहीं हल्दी की तासीर गर्म होती है। इसमें खून को पतला करने का गुण होता है। ये रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का काम करती है। पर 500 मिलीग्राम से अधिक हल्दी का सेवन न करें। अगर चोट और ज़ुकाम में हल्दी का सेवन करना चाहते हैं, तो सोने से पहले 1 गिलास दूध में दो चुटकी हल्दी डालकर लें।**

### सरसों का तेल

नीलगिरी या सरसों के तेल को गर्म करें। हल्का ठंडा होने पर इसकी दो बूंदें नाक में टपकाएं। इससे तुरंत ही राहत मिल जाएगी। ऐसा रात को सोने से पहले करें।

### तुलसी के पत्ते

कुछ ताजी धुली हुई तुलसी की पत्तियों का सेवन करें। इससे आपकी सर्दी तुरंत ही चली जाएगी।

भुसावर-राज.। भजन लाल जाटव,गृह रक्षा एवं नागरिक सुरक्षा राज्यमंत्री को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता।

जमशेदपुर-झारखण्ड। विश्व मृदा दिवस पर आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. अंजु दीदी। सरिता दास,उप सचिव,गृह-जेल-आपदा प्रबंधन,झारखण्ड सरकार ने भी इस मौके पर अपने विचार रखे।


## ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

**कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया**

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओम शान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 6



# युग परिवर्तक आधार स्तम्भ की गाथा

हम सभी जब एक विद्वत, विद्वान, विदुषी या किसी इतिहासविद् या ज्योतिषि गणना के बारे में कुछ सुनते हैं तो सभी का मन करता है कि इसको पढ़ें और इसकी गहराई में जायें। लेकिन जिनका जीवन चरित्र खुद ही बोलता हो, जिन्होंने अपने कर्मों से एक ऐसी गाथा लिख छोड़ी जिसको हम सभी या कोई भी इस दुनिया का इतिहासकार जब एक से एक कड़ी जोड़े तो भी वो कड़ी कभी ख़त्म नहीं हो सकती। ऐसे महान आधार-स्तम्भ और हमारे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का जीवन है। ऐसे शक्तिशाली मानव को जब हम कभी रुपहले पर्दे पर या कागज़ पर उतारने की कोशिश करते हैं तो पता नहीं चलता कहाँ से शुरू करें, कहाँ ख़त्म करें और क्या कहें, क्या न कहें। एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व, एक सम्पूर्ण हस्ताक्षर एक किताब का, जिसको मन करता है कि देखते जाएं, कहते जाएं और सुनते जाएं। ब्रह्मा बाबा अपने आप में एक प्रखर व्यक्तित्व थे और हम कहते व्यक्तित्व हैं क्योंकि अभी भी वे हमारी सम्पन्नता के इंतज़ार में हैं। ब्रह्माकुमारीज़ की कुछ बातें हैं जिसमें कहा जाता है कि अभी भी... जब स्वर्ग की स्थापना हो रही है, स्वर्गिक दुनिया लायी जा रही है, स्वर्णिम दुनिया की स्थापना हो रही है, तो ऐसी दुनिया को बनाने के लिए उनको अभी भी रुकना पड़ रहा है और अभी भी वे रुके हुए हैं क्योंकि जो व्यक्ति सम्पूर्ण और सम्पन्न बन जाता है और जिसके जीवन में सिर्फ और सिर्फ मात्र सेवा, मातृ सेवा और मानव सेवा समाई हो... जब तक वो कार्य सम्पन्न नहीं कर लेता तब तक वह यहाँ से नहीं जाता। अब उनकी बातें हम कर तो रहे हैं और बहुत दिनों से कर रहे हैं, 18 जनवरी 1969 को जिन्होंने शरीर त्यागा। आज 52 साल जिनको हो गये हैं और इतने सालों से जिनके बारे में सभी बता रहे हैं। सोचो...

तब भी बातें खत्म नहीं हो रही हैं। तो कितने महान व्यक्तित्व रहे होंगे वे! इतने सारे ब्रह्माकुमारीज़ के फॉलोवर्स जो उनको फॉलो करते हैं, जिन्होंने उनको नज़दीक से देखा है, जिन्होंने साकार पालना ली, जो उनके साथ बैठे, खेले, खाये, जिन्होंने उनको हर समय देखा, तो उनके लिए, उनके अंदर से बातें खत्म नहीं होती। तो ऐसे व्यक्तित्व की बातों को जब हम कभी पिरोने की कोशिश करते हैं तो शब्द कम पड़ जाते हैं। ब्रह्मा बाबा के लिए कहा जाता है कि उनकी चाल फरिश्तों की तरह थी। उन्होंने खूब अभ्यास किया। अपने आप को देह से, देह के बन्धन से मुक्त करके देही बने। वे आत्मिक स्थिति में आये और परमात्मा से सम्पूर्ण सम्बंध जोड़ने के बाद, अपने सम्पूर्ण व्यक्तित्व या सम्पूर्ण शरीर को प्राप्त किया। जिसको हम सूक्ष्म शरीर कहते हैं या सम्पूर्ण ब्रह्मा कहते हैं। तो ऐसे ब्रह्मा बाबा को जब हम समझना चाहेंगे तो कब समझ पायेंगे... जब उनके जैसा हम खुद बनेंगे और उनके जैसा बनने के लिए हमको भी निरन्तर अभ्यास करने की आवश्यकता है। तो जो कोई भी अनुभव हम कभी डालते हैं या लिखते हैं या उनके बारे में लिखने की कोशिश करते हैं तो वो अधूरा सा रह जाता है... जब तक हम ऐसा अभ्यास न करें। तो इस अव्यक्त मास में (पूरा जनवरी मास अव्यक्त मास माना जाता है) अगर उस व्यक्तित्व को हमें सच में पहचानना है कि वो कैसे थे, तो हमें उस तरह का अभ्यास निरन्तर करना होगा। बाबा ने 33 सालों तक 1936 से 1969 तक निरन्तर अभ्यास किया और अपने आप को उस अवस्था तक ले गये। तो हम सबको भी यदि उस अवस्था से ब्रह्मा बाबा को पहचानना है कि कैसे एक मानव परमात्मा के बिल्कुल नज़दीक जा सकता है, परमात्मा के साथ सम्पूर्ण सम्बंध स्थापित कर सकता है, तो सम्पूर्ण त्यागी, सम्पूर्ण वैरागी, सम्पूर्ण निर्विकारी वाली सम्पूर्ण स्थिति बनाने के लिए हमें उस तरह का अभ्यास चाहिए। नहीं तो बातें सिर्फ कही जायेंगी और आप पढ़ लेंगे और पढ़ कर साइड में रख देंगे। फिर से आयेगा जनवरी, फिर हम लिखेंगे, फिर से पढ़ कर रख देंगे। तो इस तरह का अभ्यास करके देह और देह के सम्बन्धों और दैहिक पदार्थों का त्याग कर उस ब्रह्मा को पहचाना जा सकता है, जाना जा सकता है। तो आइये, हम सब एक संकल्प लें इस अव्यक्त मास में कि हमें उस व्यक्तित्व तक पहुँचने की कोशिश करनी है। उसके लिए जितनी भी हमारी बाह्य क्रियाएं हैं और बाह्य बातें हैं, उनको थोड़ा छोड़ कर सिर्फ एक बात पर फोकस करें तो निश्चित रूप से हम भी उनके जैसे बनने में सफल हो सकेंगे।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

## जीवन दर्शन

### सदा एवररेडी

**मम्मा हर चीज़ में बच्चों का ध्यान खिंचवाती थीं। एक बार कराची में एक बहन ने शरीर छोड़ा। उसकी मात्र 2-3 दिन ही तबीयत खराब रही, इतने में ही शरीर छोड़ा। मम्मा ने सबको कहा, "देखो, सबको इसकी मृत्यु से सबक सिखना चाहिए। मृत्यु का कोई भरोसा नहीं। यह नहीं समझो कि हम तो अभी छोटे हैं, जवान हैं, हम तो अभी बहुत दिन जियेंगे। नहीं, काल कभी भी आ सकता है। इसलिए रोज़ रात को सोने से पहले अपने आपसे पूछो कि मैं अभी ही शरीर छोड़ने को तैयार हूँ? आज ही शिव बाबा का बुलावा आये तो एवररेडी हूँ?"**


## उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

**प्रश्न : मेरा नाम अनु है। मेरी समस्या ये है कि मेरा बेटा बात-बात में झूठ बोलता है। कई बार वो महसूस भी करता है और क्षमा भी मांगता है। लेकिन फिर से कोई न कोई घटना होती है तो फिर वो झूठ बोल देता है। लगता है कि उसकी ये आदत उसके लिए परेशानी का सबब बन सकती है। कृपया बतायें कैसे वो इस आदत से मुक्त हो सकता है?**

**उत्तर :** सत्य हमें शक्ति प्रदान करता है। सत्य हमारी पर्सनैलिटी को चमकाने वाला है। कहते हैं ना गॉड इज़ ट्रूथ। जब भगवान ही सत्य है तो उसकी सन्तान होने के नाते हमें भी सत्य होना चाहिए। प्योरिटी भी सत्य है और हमारी शांति भी सत्य है। जो व्यक्ति झूठ बोलता है उस पर कोई विश्वास नहीं करता, उसका जीवन खराब हो जाता है। आप चाहती हैं कि आपका बच्चा झूठ न बोले तो रोज़ एक टाइम फिक्स करके 10 मिनट उसको गुड वायब्रेशन्स देने चाहिए। और फिर संकल्प दें कि तुम तो भगवान के बच्चे हो जो सत्य है। तुम भी सत्य हो। तुम्हें भी सत्य बोलना है। तुम भी आज से सत्य बोलोगे। तुम एक महान आत्मा हो। अरे तुम्हें तो सत्य का प्रचार करना है। तुम सदा ही सत्य बोलोगे। बस ये संकल्प उसको दें, ये वायब्रेशन उसको दें और फिर धीरे-धीरे सब्कॉन्शियस माइंड इसे ग्रहण करने लगेगा। और ये आदत जो बन गई है वो डिलीट हो जायेगी।

**प्रश्नः हमने कई बार ये सुना है कि साक्षात्कार के लिए एक जटिल प्रक्रिया है। भक्ति मार्ग में ये मानते हैं कि इसके लिए एक लम्बी-चौड़ी साधना की आवश्यकता होगी। बहुत उपवास, पूजा, व्रत रखना होगा। ये सारी चीज़ें करने के बाद ही ईश्वर के दर्शन किये जा सकते हैं। क्या ब्रह्माकुमारीज़ में ऐसी कुछ प्रक्रियाएं हैं, ऐसी साधना करनी पड़ती है जिससे कि हमें साक्षात्कार हो?**

**उत्तरः** शास्त्रों में, पुराणों में ये बहुचर्चित है कि फलाने व्यक्ति ने हज़ारों साल तपस्या की और उसको ऐसे दिव्य दर्शन प्राप्त हुए। लेकिन ये हज़ारों साल एक जन्म में नहीं होता। ये जन्म बाइ जन्म, पुनर्जन्म लेते लेते जब लम्बा काल बीत जाता है, और जो सच्चे मन से, निष्काम भाव से, अव्यभिचारी भाव से भक्ति करते हैं उनको जब परमात्मा इस धरा पर आते हैं तो पूरा साक्षात्कार करा देते हैं। तो यहाँ जो आत्मायें आयी हैं इस संस्था में, ये लम्बे काल के भक्त हैं। इन्होंने लम्बा काल यानी हज़ारों साल प्रभु प्रेम में व्यतीत किया है, उसकी आराधनायें की हैं, अनेक तरह की तपस्याएं की हैं, विभिन्न साधनाओं में जीवन गुज़ारा है। अब इनकी भक्ति का काल पूर्ण होता है। तो इन्हें ज्ञान मिलता है, भगवान मिलते हैं, जो भी ये देखना चाहते हैं, चाहे निराकार शिव को देखना चाहें, महादेव को देखना चाहें, विष्णु के दर्शन करना चाहें, वो उन्हें प्राप्त हो जाते हैं।

**प्रश्नः काफी समय से हमारी परिस्थिति ठीक नहीं चल रही है। तन, मन, धन लगाकर बहुत मेहनत करने के बावजूद भी सब घाटे में जाता दिखाई देता है। हमें समझ नहीं आ रहा है कि ऐसा क्यों हो रहा है हमारे साथ? कृपया कोई समाधान बताएं।**

## मन की बातें
- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

**उत्तरः** कुछ पूर्व जन्मों के खाते के अनुसार मनुष्य बुरे समय से गुज़रने लगता है। जहाँ काम करेगा वहीं गलत हो जायेगा। सोने को भी हाथ लगा दे तो मिट्टी हो जायेगा। बिगड़ने लगेगा खेल। परिवारों में कोई तकलीफें आ जायेंगी, बीमारियां आ जायेंगी। लेकिन राजयोग में ऐसी शक्ति है कि अगर कोई सच्चे मन से एकाग्रता के साथ ये कर ले तो बुरे दिन अच्छे दिन में बदल जाते हैं और जीवन बिल्कुल प्रकाश में आ जाता है और कठिनाइयों से दूर हो जाता है। तो इसमें ये तीन संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, विघ्न विनाशक हूँ और सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है... इनका अंदर से चिंतन करते हुए अभ्यास करने से एक एनर्जी वायब्रेट होती है और मनुष्य इन चीज़ों से मुक्त हो जाता है। तो सभी अगर राजयोग अभ्यास करेंगे तो ऐसी जो बुरी परिस्थिति जीवन में आ जाती है वो सहज ही पार हो जायेगी।

**प्रश्नः पवित्रता पर एक बात और ध्यान में आती है कि भारत में बहुत सारे ऐसे मंदिर हैं जिसमें देवी-देवताओं के ऐसे चित्र बनाये गये हैं जो मन में ये भ्रम पैदा करते हैं कि शायद आदिकाल से ही ये जो विकार है वो चला आ रहा है, तो इसे क्यों दबाया जाये? क्यों एक प्रकार से अपने को परेशान किया जाए अपनी इस फीलिंग को दबा करके? कृपया इसके बारे में थोड़ा बताएं।**

**उत्तरः** मैं एक बार ऐसे ही एक मंदिर में पहुंचा जो ओडिशा में है। मैंने वहाँ के एक अच्छे विद्वान से ये प्रश्न किया कि ये क्यों दिखाया है गंदगी। क्योंकि वो गंदगी ऐसी है कि वहाँ कोई देखना नहीं चाहता बाहर। तो उन्होंने एक अच्छा रहस्य बताया कि जब भारत में बौद्ध धर्म बहुत बढ़ गया था, और बहुत लोग बौद्ध धर्म को अपनाकर पवित्रता को अपनाने लगे थे। तब शंकराचार्य ने आकर बौद्ध धर्म को भारत से समाप्त किया तो लोगों में ये एक भ्रम हो गया कि अब सबने ब्रह्मचर्य अपना लिया है, अब कैसे पुनः संतान उत्पत्ति होगी और कैसे ये संसार चलेगा! तभी कुछ लोगों ने ये प्रचार किया कि देवताएं भी भोगी थे। उस समय लोग बहुत मंदिरों में जाने लगे थे तो उन्होंने सोचा कि मंदिरों में ऐसे चित्र बना दिये जायें जिनसे लेसन लेकर लोग पुनः भोग-विलास की ओर बढ़ें। तो वास्तव में ये देवताओं के अंतिम समय की बातें हैं जब वे वाम मार्ग में गये। अन्यथा देवता लम्बे काल तक सतयुग और त्रेतायुग में सम्पूर्ण पवित्र ही थे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com


मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 7



# बदलाव की महसूसता आपको बदल देगी

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

**दृष्टि और वृत्ति को न बदला तो कृति नहीं बदलेगी। अगर कृति न बदली तो विकर्मों में धंसता जायेगा। स्मृति-भ्रंश हो जायेगी और जिसकी स्मृति ही भ्रंश हो जाये, तो गीता के महावाक्य हैं कि उसकी केवल लुटिया ही नहीं डूबती, उसका तो सर्वनाश हो जाता है।**

कोई पुरूषार्थी सोच सकता है कि ये जो ऊँची-ऊँची बातें हैं, ये उनकी पहुँच से बाहर हैं और अभी तो वे उससे काफी दूर हैं। कोई तो ये भी कहेंगे कि ये आदर्श हैं, ये व्यवहारिक नहीं हैं। वे यह जानना चाहेंगे कि वे ऐसी गगनचुम्बी अवस्था में अथवा स्थिति के शिखर पर कैसे पहुँचें, उनका मन जो बार-बार मैला हो जाता है, उस धूल-मिट्टी अथवा कचड़े-कीचड़ से कैसे बचे रहें? वे कहेंगे कि उनकी दृष्टि पर तो दूसरों के अवगुणों का चश्मा चढ़ा ही रहता है या उनके दुर्गुण उनकी आँख में धूल के कंकड़ की तरह चुभते ही रहते हैं। आखिर उन्हें आँखें तो खुली रखनी है, तब उनकी दृष्टि कैसे निर्मल बनी रहे? ये प्रश्न हरेक के लिए उपयोगी है। इनके पीछे तब दृष्टि और वृत्ति को बदलने की चेष्टा है। यह चेष्टा संकेत देती है कि उनकी पुरूषार्थ करने की नियत तो है।

ऐसे लोग उन लाखों-करोड़ों से अच्छे हैं जो अपनी दृष्टि-वृत्ति को बदलने की कामना ही नहीं करते। अपनी हालत खराब कर बैठने के बावजूद भी वे इस खराबी के स्वाभाविक होने की बात करते हैं और तर्क-वितर्क से उसे युक्ति-संगत बताते हैं। ऐसे लोगों का बदलना तब तक असम्भव है जब तक उन्हें यह एहसास ही नहीं होता है कि हमें स्वयं को बदलना चाहिए। बदलना आवश्यक है। बदलने के बिना हमारी गति ही नहीं है। आज बदलें या कल, बदलने के बिना कोई दूसरा रास्ता ही नहीं है। मन की गहराई से यदि हम बदलना स्वीकार नहीं करेंगे तो परिस्थितियाँ हमें बदलने पर मजबूर कर देंगी। तब भी यदि हम न बदले तो फिर हम स्वयं को मनुष्य की कोटि में न समझें।

कुत्ता एक ऐसा पशु है जिसकी पूँछ सदा टेढ़ी बनी रहती है। कहते हैं कि एक मनुष्य ने वर्षभर कुत्ते की पूँछ को लोहे की नली में सीधा कसकर रखा। उसने सोचा एक वर्ष काफी होता है,अब तो यह पूँछ सीधी हो गयी होगी। इस दौरान कुत्ता चिल्लाता भी था तो भी उसने उसकी पूँछ पर से नली नहीं हटायी। पर वर्षभर बाद जब हटायी तब वो यह देखकर आश्चर्य चकित हुआ कि कुत्ते की पूँछ वैसी की वैसी टेढ़ी है! ऐसे ही कुछ लोग बदलना ही नहीं चाहते। उनके बारे में तो कहेंगे कि 'अल्लाह खैर करे, खुदा हाफिज, उन्हें खौफे खुदा ही नहीं है', जो धर्मराज से ही नहीं डरते वे धर्मात्माओं से कहाँ डरेंगे!

## अब छोड़ो व्यर्थ बातें सुनने और दूसरों के दुर्गुण देखने की आदत को

जो बदलना चाहे, उनके लिए कल्याणकारी प्रभु ने अनेक विधियाँ, युक्तियाँ अथवा उपाय बताये हैं जिनसे उनकी आत्मा में घुसे हुए संस्कार बाहर निकल जायें और उनका पीछा छोड़ दें। उन सबका तो यहाँ उल्लेख करना सम्भव नहीं है परन्तु एक ऐसी बात को यहाँ हम लिपिबद्ध करना चाहेंगे जोकि किसी अंश में हमारी दृष्टि-वृत्ति को विकृत होने से बचा सकती है। वो यह है कि कई बार हम किसी व्यक्ति से किसी दूसरे की निन्दा सुनकर, चुगली सुनकर, शिकायत सुनकर, अफवाह सुनकर उसे तुरन्त मान जाते हैं और यह सोचने लगते हैं, "अच्छा, वो व्यक्ति ऐसा निकृष्ट है! हमने तो उसके विषय में कभी ऐसा सोचा भी नहीं था।" हम उस बात की जाँच नहीं करते। बल्कि यह देखकर कि कहने वाला व्यक्ति हमारा घनिष्ठ मित्र है, विश्वासपात्र है, हमारे निकटतम है, हम उस बात को दूसरे व्यक्ति की अनुपस्थिति में मान जाते हैं। गोया हम उसकी पीठ में छुरा घोंपते हैं। चाहे वो व्यक्ति निर्दोष ही हो, हम दूसरे के कहने में आकर मन ही मन उससे घृणा करने लगते हैं। जिसे हम अच्छा समझते थे, उसे अब घटिया मानने लगते हैं और कई बार तो दूसरों को कहने लगते हैं कि "अरे, तुम्हें मालूम है कि उस व्यक्ति का तो फलाँ से लगाव-झुकाव है, वो झूठा है, ठग है, बेईमान है, वो केवल बाहर का दिखावा दिखाता है और वाचाल(बोलने में होशियार) है, बाकी उसमें ज्ञान-ध्यान कुछ नहीं है। तुम आगे से उससे बोलना छोड़ दो, उसका संग खराब है। मनुष्य कमर के साथ भारी पत्थर बांधकर पानी में उतरेगा तो डूबेगा ही।

उसके संग वाले का भी ऐसा ही परिणाम होगा। सुना, तुम बचकर रहना।" जब ऐसी दृष्टि-वृत्ति हो जाये तो मनुष्य की अपनी बुद्धि मारी जाती है क्योंकि वो स्वयं अपनी बुद्धि में कंकड़-पत्थर इकट्ठे करने लगता है गोया अपनी ही डूबने की तैयारी करने लगता है। अपने को ज़िन्दा जलाने के लिए अपनी चिता की लकड़ियाँ स्वयं चुनकर लाता है और उनकी सेज बनाता है। अपनी हत्या के लिए अग्नि स्वयं अपने हाथ से जगाता है। उसे किसी करनीघोर ब्राह्मण की आवश्यकता ही नहीं। शमशान पर जलाने की रस्म करने वाले जो पंडित होते हैं, उनकी भी उसे आवश्यकता ही नहीं। वो बिना मंत्र और रस्म के मर जाता है। किसी को उसका जनाज़ा उठाने की भी ज़रूरत नहीं क्योंकि वह तो अपने आप ही चिता पर लेट जाता है। हाय, हम अपने जीवन से यह क्या करते हैं! जैसे कोई चन्दन को जलाकर कोयला बना ले, वैसे ही हम अपने जीवन को भस्म कर देते हैं। अब छोड़ो दुश्मनी को, उसके लिए छोड़ो नफरत को, नफरत को छोड़ने के लिए छोड़ो दूसरों की व्यर्थ बातें सुनने को और दूसरों के दुर्गुणों को देखने की आदत को। अगर यह एक बात भी हम पक्की कर लें तो भी हम उस रास्ते पर चल पड़ेंगे और खुशी,आनन्द तथा मित्रभाव के झूले में झूलते रहेंगे। दृष्टि और वृत्ति को न बदला तो कृति नहीं बदलेगी। अगर कृति न बदली तो विकर्मों में धंसता जायेगा। स्मृति-भ्रंश हो जायेगी और जिसकी स्मृति ही भ्रंश हो जाये, तो गीता के महावाक्य हैं कि उसकी केवल लुटिया ही नहीं डूबती, उसका तो सर्वनाश हो जाता है।

# किसके पास... मेरे इन सवालों का जवाब!!!

ब्र.कु. मोनिका,शांतिवन

**मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? ऐसा हमारे साथ ही क्यों होता है? संसार में ये सब क्या और क्यों चल रहा है? अब क्या होगा? कब तक ऐसा चलेगा? क्या ये कभी ठीक नहीं होगा? ये हमारे मन में उठने वाले ऐसे सवाल हैं, जिनका जवाब देने का सामर्थ्य इस संसार के किसी प्राणी या प्रकृति में नहीं...। तो कौन देगा हमारे इन सवालों का जवाब... कौन सुलझायेगा हमारी उलझन...!!**

कहते हैं, एक ही दुनिया है जहाँ हम सभी रहते हैं। सभी जीते हैं। दिखता भी कुछ ऐसा ही है। और सच भी है... पर कुछ कुछ। हम सब रह तो एक ही धरती पर रहे हैं, कोई दूसरी धरती नहीं, एक ही आकाश के नीचे, एक मौसम का अहसास करते हुए। लेकिन इस दिखने वाली दुनिया से अलग हमारी बहुत सारी दुनिया है, जिसे हम दुनिया भले ही ना कहें, लेकिन वो ही हमारी दुनिया और हमारी ज़िन्दगी होती है।

जी हाँ, हम हर एक मनुष्य की अपनी-अपनी एक अलग ही दुनिया होती है। सभी अपनी-अपनी दुनिया में ही जीते हैं। न मैं उनकी दुनिया में जीती, न वो मेरी दुनिया में। हमारे 'तन' की दुनिया तो एक ही है पर 'मन' की दुनिया सबकी अलग-अलग।

कोई शोहरत की दुनिया में जीता है, कोई अहं की दुनिया में, कोई धर्म की दुनिया में, कोई माया की दुनिया में, कोई ख्यालों की दुनिया में... वगैरह वगैरह। लेकिन एक दुनिया है, जो एक आवरण की तरह हर एक दुनिया को ढ़के हुए है। जो हर दुनिया के साथ अपना सम्बंध रखती है। वो दुनिया है 'सवालों की'। वो आवरण है 'सवालों का'।

इस सवालों की दुनिया के आवरण को उतारने का प्रयास हम इस धरती पर आते ही प्रारंभ कर देते हैं। एक अबोध बच्चा बचपन से ही खुद को सवालों के घेरे में पाता है। वो अपने हर एक सवाल सबसे पूछता, जवाब ढूंढ़ता रहता है। भले ही वो सवाल सबके लिए बेमायने हों लेकिन उसके लिए बहुत मूल्यवान और आगे बढ़ने की सीढ़ी होती है। धीरे-धीरे बड़े होते-होते उस बच्चे को बहुत से सवालों के जवाब मिल जाते। लेकिन ज़िन्दगी में कुछ सवाल ऐसे होते हैं, जिनके जवाब ढूंढ़ने में पूरी उम्र बीत जाती है। फिर चाहे हम बड़े से बड़े विद्वान ही क्यों न बन जायें! ऐसे कुछ सवाल... मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? ऐसा हमारे साथ ही क्यों होता है? संसार में ये सब क्या और क्यों चल रहा है? अब क्या होगा? कब तक ऐसा चलेगा? क्या ये कभी ठीक नहीं होगा? ये ऐसे सवाल हैं, जिनका जवाब देने का सामर्थ्य इस संसार के किसी प्राणी, ज्योतिषी, दार्शनिक या वैज्ञानिक के पास नहीं है और ना ही प्रकृति के पास है।

लेकिन कोई एक है जो हमारे इन सभी सवालों का स्पष्ट और सटीक जवाब दे सकता है। जी हाँ, वो एक हैं, हम सभी आत्माओं के परमपिता, जगत नियंता, सृष्टि के रचयिता, परमात्मा। क्योंकि वे इस सृष्टि के आदि, मध्य, अंत को जानते हैं। वे हमारे इस जन्म को ही नहीं, हर जन्म को जानते हैं। हमारे साथ क्या, क्यों हो रहा है और आगे क्या होगा, वो ये सबकुछ जानते हैं, तभी तो उन्हें जानीजाननहार कहते हैं। लेकिन इन उलझन भरे सवालों में उलझे हम मानव, अन्य 'मानवों' से जवाब पाने की उम्मीद रखते हैं! अरे, वे मनुष्य तो खुद अपने बारे में ही कुछ नहीं जानते, तो आपको क्या बतायेंगे! आपकी उलझन को क्या सुलझायेंगे!

हमारे पास भी सभी की तरह ही ऐसे बहुत सारे सवाल थे। अपनी ज़िन्दगी को लेकर, अपने भविष्य को लेकर, संसार के हालात को लेकर बहुत सारी उलझनें थीं। लेकिन जब प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय से हमारा सम्पर्क हुआ, तो यहाँ स्वयं परमशिक्षक, परमसद्गुरू परमात्मा के उन रूहानी वचनों को सुनने का सौभाग्य मिला जिसने हमें इस देह की दुनिया से ऊपर उठने की शक्ति दी और तब उन्होंने हमें हमारा और अपना सत्य परिचय कराया। हमें हमारे बारे में सबसे ज़्यादा और सबसे सही वही बता सकता है जिसने हमें जन्म दिया है। तो वो ही तो हमारा सत्य और अविनाशी पिता है। तो उन्होंने हमें सृष्टि के आदि मध्य अंत का ज्ञान दिया और बताया कि हम सृष्टि के आरंभ में सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी देवता थे, हममें कोई विकार या बुराई नहीं थी। इसलिए हम सदा सुखी भी थे। लेकिन धीरे-धीरे हममें अहं, ईर्ष्या, नफरत आदि बुराइयों ने जन्म लिया और हम माया की राह पर चल पड़े। आज परमात्मा इस सृष्टि के महापरिवर्तन(कलियुग के अंतिम और सतयुगी सृष्टि के आरंभ) के समय हमें ये बता रहे हैं कि हे मेरे लाडले बच्चे, अब इस बुराई की राह को छोड़ो और सत् धर्म की राह पर चलो। क्योंकि ये राह ही तुम्हें तुम्हारे जीवन के हर सवालों की उलझनों से भी निकालेगी और आने वाली सतयुगी सृष्टि में देवी-देवता व महाराजा महारानी पद को प्राप्त करने के योग्य बनायेगी। परमात्मा कहते हैं, तुम मेरी श्रीमत पर चलो, मुझे प्यार से याद करो, तो तुम्हें माया की छाया छू भी नहीं सकेगी। तुम कभी समस्याओं में उलझेंगे नहीं बल्कि सहज उन समस्याओं, सवालों से बाहर निकल अन्य मनुष्यों के लिए एक मिसाल बनेंगे।

तो हे आत्माओं, अपने सवालों का सही जवाब पाना है तो इंसान के पास नहीं, भगवान के पास जाइये। फिर देखना, आपको किसी के पास कभी जाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी।

और अब तो हमारा दिल परमात्मा के लिए यही गुनगुनाता है... कि

**ज़रूरी नहीं मेरे हर सवाल का तू जवाब दे,**
**मुस्कुराकर भी तू मेरी हर उलझन दूर कर सकता है।**

OM-19 - 2020 FINAL FILE_Page 1 and 2 28/12/2020 11:29 AM Page 8



**दादी का सम्मान |** वर्ष 1994 में प्रजापिता ब्रह्माबाबा के नाम पर 1 रुपये का टिकट हुआ था जारी

# दादी जानकी के प्रथम स्मृति दिवस पर उनके नाम पाँच रुपये कीमत के पाँच लाख डाक टिकट होंगे जारी

### 27 मार्च 2021 को केन्द्र जारी करेगा डाक टिकट

भारत सरकार ब्रह्माकुमारीज़ की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी के सम्मान में उनका डाक टिकट जारी करेगी। यह डाक टिकट उनके प्रथम स्मृति दिवस पर जारी किया जाएगा। दरअसल, 27 मार्च 2020 को प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी दिवंगत हुई थीं। 104 वर्ष की उम्र तक दादी जानकी ने समाज और खासकर युवाओं और नारी उत्थान के लिए कई कार्य किये। उन्हीं के सम्मान में यह डाक टिकट जारी किया जा रहा है। इसकी सारी प्रक्रिया पूरी हो गई है और संचार मंत्रालय की ओर से इस पर सहमति भी दे दी गई है। गौरतलब है कि दादी जानकी 21 साल की उम्र में संस्थान से जुड़ी थीं। इसके बाद उन्होंने पश्चिमी देशों में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार की ज़िम्मेवारी निभाई। 140 देशों तक संस्थान का विस्तार होने के बाद वे साल 2007 में संस्थान की मुखिया बनी थीं।

### 21 वर्ष की आयु से जुड़ीं ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से - राजयोगिनी दादी जानकी

यह डाक टिकट उनके पहले स्मृति दिवस 27 मार्च 2021 को जारी किया जाएगा। पहले चरण में पाँच रुपये के पाँच लाख टिकट जारी किये जाएंगे। इसको लेकर आबूरोड स्थित अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय पर भी तैयारी शुरू हो गई है। गौरतलब है कि राजयोगिनी दादी जानकी 21 वर्ष की उम्र में ही ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी थीं तथा संस्थान के प्रारंभ में ही संस्थान के संपर्क में आईं और पूर्ण रूप से समर्पित हो गईं। ब्रह्माकुमारी संस्थान के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने उन्हें पश्चिमी देशों में भारतीय संस्कृति, सभ्यता और मानवीय मूल्यों के प्रचार-प्रसार की ज़िम्मेदारी सौंपी थी।

### 27 वर्ष पहले प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का हुआ था डाक टिकट जारी

संस्था का यह दूसरा डाक टिकट होगा जो सरकार की ओर से जारी किया जायेगा। इससे पूर्व प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का 1994 में डाक टिकट जारी किया गया था जो एक रुपये का था।

## ऑस्टिन में मेडिटेशन सेंटर का उद्घाटन

**ऑस्टिन-टेक्सास(यू.एस.ए.) |** ब्रह्माकुमारीज़ के नवनिर्मित राजयोग मेडिटेशन सेंटर का उद्घाटन किया गया। ऑस्टिन में ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं की शुरुआत 1978 में युनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास,ऑस्टिन में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित पब्लिक प्रोग्राम में राजयोगिनी दादी जानकी के शुभ वचनों से हुई। युनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास,ऑस्टिन में विद्यार्थियों की संख्या पचास हज़ार से भी अधिक है। ऑस्टिन में पहले ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र की स्थापना 1980 में ब्र.कु.डॉ.हंसा,टेक्सास एरिया कोऑर्डिनेटर द्वारा की गई थी।

# नये युग की रोशनी का आधार : युवा शक्ति

**सम्बलपुर-ओडिशा |** ईश्वरीय मार्ग पर चलने वाले युवा भाई-बहनों के लिए आयोजित "नये युग की नई रोशनी" बी.के. यूथ ऑनलाइन वेबिनार में ब्रह्माकुमारीज़ की अति. मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतन मोहिनी,चेयरपर्सन,यूथ विंग ने कहा कि नये युग की नई रोशनी का आधार है युवाओं की शक्ति। युवा अगर अपनी शक्ति को सकारात्मक दिशा में लगाए तो नई दुनिया सहज आ सकती है। राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रिका दीदी,वाइस चेयरपर्सन, यूथ विंग,अहमदाबाद ने कहा कि अगर हम परमात्म शक्ति को अपने अंदर धारण करके चलें तो ये नई रोशनी लोगों को हमसे ही दिखाई देगी। ब्र.कु. कमलेश दीदी,डायरेक्टर,कटक सबज़ोन ने कहा कि जन-जन तक परमात्म संदेश पहुँचाने के लए परमात्मा ने विशेष युवाओं को ही चुना है। नितीश गंगदेव,सांसद,लोकसभा,सम्बलपुर की धर्मपत्नी अरुंधति देवी ने कहा कि युवा अपने जीवन में मेडिटेशन को अपनायें और अच्छी शिक्षा वाली किताबें पढ़ें तो खुद को इम्प्रूव कर सकते हैं। सिद्धार्थ शुक्ला,एक्टर,मॉडल एवं टीवी होस्ट ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में जो शिक्षा दी जा रही है वो हमें जीवन जीना सिखाती है। ब्र.कु. अरुण,एडि.जी.एम.,एन.टी.पी.सी.एस.,राउरकेला ने कहा कि परमात्मा का मिशन है नई दुनिया बनाना, इसके लिए चाहिए स्वराज्य अधिकारी एवं आत्म-अभिमानी स्थिति। ब्र.कु. पार्वती दीदी,डायरेक्टर, सम्बलपुर सबज़ोन ने गुलदस्ते एवं मधुर शब्दों से मेहमानों का स्वागत किया। ब्र.कु. स्नेहा ने कार्यक्रम संचालन किया। ब्र.कु. सुधा दीदी,रशिया, ब्र.कु.सपना, चीन, ब्र.कु.ललित एवं ब्र.कु.आत्म-प्रकाश,मधुबन ने बहुत रुचिकर विषयों पर प्रकाश डाला। पैनल डिस्कशन में ब्र.कु. कृति,अहमदाबाद, ब्र.कु. राम कृष्णा,हैदराबाद, ब्र.कु. श्रेया,मुंबई तथा ब्र.कु. श्रीनिधि,मधुबन ने युवाओं के प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर दिया। वेबिनार में ओडिशा तथा अन्य प्रांतों के करीब 350 बी.के. युवा भाई-बहनें लगातार जुड़े रहे।

# परमात्म याद से बढ़ायें एकाग्रता

**ग्वालियर-म.प्र. |** गरीब मजदूर पाठशाला शाखा विवेकानंद नीडम में बच्चों के लिए चरित्र निर्माण और मूल्य शिक्षा पर आधारित कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जहां पर गरीब मजदूर भाइयों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। गरीब मजदूर पाठशाला की वर्तमान में पाँच शाखाएं चल रही हैं जिनमें लगभग 200 बच्चों को जो कि गरीब मजदूर भाइयों के बच्चे हैं, उनको उनके घर पर ही पढ़ाते हैं। इस कार्य में मार्गदर्शक एवं इस केन्द्र के संरक्षक ओ.पी. दीक्षित,सेवानिवृत्त शिक्षक हैं तथा साथ ही साथ ब्रजेश शुक्ला, शासकीय शिक्षक, मनोज पांडे, सेवानिवृत्त फौज, भरत सिंह चौरसिया, कपिल झा, साहिल खान और मृदुल शर्मा स्वयंसेवक के रूप में कार्य कर रहे हैं। कार्यक्रम में सभी बच्चों को चरित्र निर्माण एवं नैतिक शिक्षा के बारे में बताते हुए ब्र.कु. प्रह्लाद ने कहा कि हमें हमेशा अपने माता-पिता और गुरूजनों का सम्मान और उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए। हमारा जीवन अनुशासित होगा और हम अपने बड़ों का सम्मान करेंगे तो हम जीवन में बहुत आगे जा सकेंगे। उन्होंने कहा कि हम सभी आत्माओं के पिता परमात्मा शिव हैं जो कि निराकार ज्योति बिंदु स्वरूप हैं। उनको याद करने से हम अपनी एकाग्रता को बढ़ा सकते हैं। साथ ही उन्होंने सभी बच्चों को योग एवं ध्यान का जीवन में महत्व बताते हुए राजयोग ध्यान की अनुभूति कराई और बच्चों को खूब पढ़ने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात् समाज सेवक एवं वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. एस.पी. बत्रा, समाज सेवक अनिल कुमार पंजवानी एवं ब्र.कु. प्रह्लाद ने बच्चों को मिठाइयां, शैक्षणिक सामग्री, दरी, मोजे, गर्म टोपी और मास्क का वितरण किया। ब्रजेश शुक्ला ने आभार व्यक्त किया।

# 'ऊर्जा बचाओ धरती बचाओ' वेबिनार

**रानी-राज. |** राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस पर ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र द्वारा जन-जागरुकता के लिए आयोजित 'ऊर्जा बचाओ धरती बचाओ' विषयक वेबिनार में ब्र.कु. केदार खमितकर,एनर्जी ऑडिटर, पी.सी.आर.ए.,भारत सरकार ने पी.पी.टी. एवं विडियोज़ के माध्यम से सभी को जागरुक किया कि कैसे पेट्रोल, ईंधन गैस और बिजली बचाएं। उन्होंने 'बटन दबाओ बिजली बचाओ' का संदेश दिया। साथ ही कहा कि गाड़ी को नियंत्रित कर पेट्रोल बचाया जा सकता है। गाड़ी पर लोड ज़्यादा हो तो भी पेट्रोल की ज़्यादा खपत होती है। खाना पकाते समय उबाल आने पर आँच धीमी करने और ढ़क कर पकाने पर कम गैस खर्च होती है। ब्र.कु. गोलो,पिल्ज,सलाहकार, अक्षय ऊर्जा विभाग, ब्रह्माकुमारीज़,जर्मनी ने प्रेज़ेन्टेशन के ज़रिये लोगों को 'फाइव आर्स' के बारे में बताया- रीथिंक बिफोर यू बाइ, रीयूज़ ऐज़ मच ऐज़ पॉसिबल, रिड्यूज़ योर कंज़म्पशन, रीसाइकल वॉटेवर इज़ पॉसिबल एंड रिफ्यूज़ टू फॉलो ऑल फैशन ट्रेंड्स। चिंतन शाह, डायरेक्टर,टेक्निकल,आई. आर.ई.डी.ए.,नई दिल्ली ने बिजली बचाने तथा सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा जैसे अक्षय ऊर्जा का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। सभी वक्ताओं ने ऊर्जा बचाने की प्रेरणा देते हुए उपाय बताए। संचालन ब्र.कु. अस्मिता ने किया तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सोनू बहन से सभी का धन्यवाद किया।

# धूमधाम से मनाया स्थापना दिवस

**खिमलासा-बीना(म.प्र.) |** ब्रह्माकुमारीज़ के खिमलासा सेवाकेंद्र का स्थापना दिवस सोशल डिस्टेंसिंग एवं अन्य नियमों का पालन करते हुए बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर बीना सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सरोज बहन ने कहा कि कोरोना-काल में सभी भाई-बहन योग के माध्यम से सभी को सकाश दें ताकि जल्द ही इस आपदा से उबर सकें। खुरई सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. किरण बहन ने कहा कि ईश्वरीय सेवा या परोपकार के कार्य में कभी भी अपना तन-मन-धन लगाते समय उसका लोगों के साथ वर्णन नहीं करना चाहिए। खिमलासा सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. जानकी बहन ने सभी को राजयोग की गहन अनुभूति कराते हुए कहा कि वर्तमान समय में लोगों को सबसे ज़्यादा भावनात्मक सहारे की ज़रूरत है। पठारी सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शिवानी बहन ने कहा कि सभी माता-पिता आज संकल्प करें कि जब कभी हमारे बच्चे सेवा के कार्य में, लोगों के कल्याण के कार्य में या भगवान को अपना जीवन अर्पित करने का संकल्प करें तो उनका सहयोग करेंगे। कार्यक्रम में शिवध्वज वंदन कर स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में केक काटा गया। इस मौके पर ब्र.कु. गुड्डी बहन, ब्र.कु. मधु बहन, ब्र.कु. रिया बहन सहित अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे। साथ ही सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th Dec, 2021
स्वामी - आर.ई.आर.एफ. (मीडिया विंग), प्रकाशक - गंगाधर नरसिंघानी, मुद्रक - डी.बी. कॉर्प.लि. द्वारा भास्कर प्रिन्टिंग प्रेस, डी.बी. कॉर्प.लि.,शिवदासपुरा, टोंक रोड,जयपुर से मुद्रित एवं ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित, सम्पादक - गंगाधर नरसिंघानी।
कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन, आबू रोड(राज.)- 307510
See Latest News - www.omshantimedia.org